प्रकाशक
अ० वा० सहस्रबुद्धे
मंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ
वर्धा (म० प्र०)

पहली बार १५,०००
अक्तूबर, १९५५
मूल्य चार आना

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

पुस्तक-परिचय

१८ अप्रैल, १९५१ के दिन पोचमपल्ली (तेलगाना) मे भूमिदान-यज्ञ की शुरुआत हुई। यज्ञ जब सफलता की ओर अग्रसर होता है, तव उसमे से यज्ञ-देवता प्रकट होता है। भूमिदान-यज्ञ की शुरुआत के ठीक तीन वर्प वाद वोधगया मे वार्षिक सर्वोदय सम्मेलन के मौके पर 'जीवन-दान' प्रकट हुआ। ता० १९ अप्रैल, १९५४ को तीसरे पहर सम्मेलन के अधिवेशन में विभिन्न प्रान्तो के भूदान कार्यकर्ता एक के वाद एक अपने विचार सम्मेलन के सामने रख रहे थे। इसी सिलसिले मे पहले से निर्धारित कार्यक्रम के मुताविक जब सम्मेलन की अध्यक्षा श्री आशा वहन आर्यनायकम् ने श्रद्धेय जयप्रकाशजी से अनुरोध किया कि वे कुछ कहे तथा जयप्रकाशजी ने वोलने की अनिच्छा और अपने हृदय का भारीपन व्यक्त करते हुए वोलना शुरू किया, तव किसीको—खुद जयप्रकाशजी को भी—इस वात का कोई आभास नही था कि उनके मुँह से अहिंसक क्रान्ति के इस यज्ञ के लिए 'जीवन समर्पण' की घोपणा होनेवाली है।

पर वोलते-वोलते उनकी वाणी मे ओज वढता गया और दृढता आती गयी। शुरू की हिचकिचाहट और खिन्न मन.स्थिति की जगह भूदान-यज्ञ आन्दोलन से प्रकट हुई अहिंसात्मक क्रान्ति की प्रक्रिया मे अटल विश्वास और निश्चयात्मक वृद्धि का दर्शन हुआ और अन्त मे सम्मेलन-मडप मे एकत्रित विराट् जन-

समुदाय को स्तब्ध और अभिमन्त्रित करनेवाला 'जीवन-दान' का वह मगल सकल्प !

जयप्रकाशजी के खुद के शब्दो मे सकल्प के वे शब्द 'अनायास ही' उनके मुँह से निकल पडे थे, अर्थात् इसके लिए उन्हें उस समय विचारपूर्वक कोई प्रयत्न (Conscious Effort) नही करना पडा। पर मानस में तो उसकी तैयारी अन्दर ही अन्दर वर्षों से हो रही थी। फल धीरे-धीरे पेड पर पकता रहता है और फिर एक क्षण आता है, जब बिना किसी बाहरी प्रयत्न के वह पका हुआ फल अपने आप गिर पडता है। वही बात जयप्रकाशजी के 'जीवनदान' की हुई। जीवनदान की घोषणा की उस स्थूल घटना के पहले किस तरह वर्षों तक उनके मानस में इसकी तैयारी हो रही थी, जीवनदान की पार्श्वभूमि बन रही थी, इसका वर्णन खुद जयप्रकाशजी के शब्दो में पाठक पहली बार इस पुस्तिका में पढेगे। 'जीवनदान की भूमिका' में उन्होने अपने क्रमिक मानस-परिवर्तन का चित्र प्रस्तुत किया है।

जयप्रकाशजी द्वारा जीवनदान की इस ऐतिहासिक घोषणा के बाद सम्मेलन का सारा रग और रुख बदल गया। निर्धारित कार्यक्रम में और भी लोगो के नाम बोलनेवालो में थे, पर बदली हुई परिस्थिति में अब विनोबा ही कुछ कह सकते थे। विनोबा बोले, पर उनके मन में भी भावनाओ का प्रवाह बह रहा था। जयप्रकाशजी के जीवन-समर्पण की तुलना 'रुक्मिणी-पत्रक' के प्रसग से करते हुए उनका गला रुँध गया—आँखें भर आयी ! विनोबा के मनोमन्थन का परिणाम दूसरे दिन सबेरे के अधिवेशन में पढे गये उनके खुद के जीवन-समर्पण के पत्र के रूप में प्रकट हुआ।

इस प्रकार 'जीवनदान' की पावन गंगा किन परिस्थितियों में, किस तरह प्रकट हुई—इस घटना-चक्र का चित्र इस पुस्तक के पहले अध्याय में मिलेगा। इस अध्याय में स्वयं जयप्रकाशजी के शब्दों में दी हुई 'जीवनदान की भूमिका' के बाद बोधगया-सम्मेलन का उनका वह भाषण दिया है, जिसके अन्त में उन्होंने जीवनदान की घोषणा की। उसके बाद विनोबाजी का वह भाषण, जिसका ऊपर जिक्र किया है, और अन्त में उनके द्वारा जयप्रकाशजी को दिया गया वह ऐतिहासिक पत्र, जिसमें वर्षों पहले से समर्पित जीवन के दुवारा समर्पण (Re-dedication) की घोषणा करके विनोबा ने सामाजिक मर्यादा-पालन का अनुपम उदाहरण पेश किया है। इस प्रकार पहला अध्याय जीवनदान यज्ञ की शुरुआत का इतिहास है।

दूसरे अध्याय में 'जीवनदान' के तात्त्विक तथा व्यावहारिक पहलुओं पर जयप्रकाशजी के विचार दिये गये हैं, जिससे पाठक समझ सकें कि जीवनदान का मतलब क्या है और जीवनदान करनेवाले को क्या करना चाहिए। तीसरा अध्याय 'जीवनदानियों से' है, जिसमें विनोबा, जयप्रकाशजी तथा धीरेन भाई के विचार मार्गदर्शन की दृष्टि से दिये गये हैं।

आशा है, इस पुस्तक के प्रकाशन से जीवनदान का स्वरूप लोगों के सामने स्पष्ट हो जायगा और 'भूदान-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति' के युग-धर्म के लिए सन्त विनोबा तथा श्रद्धेय जयप्रकाशजी के चरण-चिह्नों पर चलकर जीवन-समर्पण करने की प्रेरणा उन्हें मिलेगी।

—सिद्धराज ढड्ढा

सहमंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ

गया (बिहार)

२ अक्तूबर, १९५५

अनुक्रम

जीवन-समर्पण : १ :

जीवनदान की भूमिका

एक समाजवादी की हैसियत से देश की जमीन के सही बँटवारे का सवाल मेरे सामने शुरू से ही रहा है। समाजवादी पार्टी का आर्थिक कार्यक्रम बनाने का मुझे जब-जब मौका मिला, तब-तब भू-वितरण का विषय मैने उसमे अवश्य रखा। पिछले आम चुनाव के अवसर पर समाजवादी पार्टी के घोषणा-पत्र मे भी इस विषय को बडे महत्त्व का स्थान दिया गया था।

भू-वितरण का तरीका हम लोगो के सामने कानून का ही तरीका था। भूमिहीनो का सगठन हो, वितरण का आन्दोलन चले, जगह-जगह जमीन के बारे मे सघर्ष किया जाय और या तो चुनाव जीतकर शासन अपने हाथ मे लिया जाय तथा जमीन का बँटवारा किया जाय अथवा ऐसी परिस्थिति पैदा की जाय कि चाहे जिस पक्ष का शासन हो, उसे भू-वितरण करना ही पडे। काग्रेस-सरकार ने अपने भू-सुधार के कार्यक्रम मे वितरण को स्थान नही दिया था। इसलिए समाजवादी पार्टी को अपने प्रचार-कार्य के लिए यह एक बडा मुद्दा मिल गया था।

सन् '५२ में पचमढी मे समाजवादी पार्टी का सम्मेलन हुआ था, जिसके लिए भू-वितरण का प्रस्ताव मैने लिखा था। मेरे मन मे उस वक्त यह था कि सारे देश मे भू-वितरण के लिए एक

जोरदार आन्दोलन चलाया जाय। इसके लिए पचमढी में एक अखिल भारतीय कमेटी भी बना दी गयी थी। इधर उस समय तक भूदान-आन्दोलन शुरू हो चुका था। यद्यपि उसमें मै प्रत्यक्ष भाग नही ले रहा था, फिर भी उस प्रस्ताव मे भूदान-आन्दोलन का स्वागत किया गया था और उसके लिए पार्टी का समर्थन भी प्राप्त किया गया था। उस समय तक मेरे सामने यह स्पष्ट नही था कि समाजवादी पार्टी का भू-वितरण आन्दोलन और भूदान-आन्दोलन किस प्रकार साथ-साथ चलेंगे और उनमें परस्पर का सबध क्या होगा, लेकिन इतना तो था ही कि समाजवादी आन्दोलन भी शान्तिमय तरीके से चलाया जानेवाला था। फिर भी उसके पीछे वर्ग-सघर्ष की भावना थी।

पचमढी के बाद ही मै विनोबाजी से मिलने के लिए बाँदा गया। उनसे बातचीत करके भूदान-आन्दोलन के दर्शन और कार्य-पद्धति को समझने की कोशिश की। उसके बाद गया जिले मे मुझे भूदान का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। ज्यों-ज्यो इस आन्दोलन की गहराई में प्रवेश करता गया, मुझे यह प्रतीत होने लगा कि देश की भू-समस्या के हल करने का इससे बढकर कोई दूसरा तरीका हो नही सकता। किसी एक पक्ष द्वारा भू-वितरण का आन्दोलन चलाने की अपेक्षा विनोबाजी का पक्षातीत आन्दोलन चलाने का रास्ता मुझे ज्यादा सही लगा। धीरे-धीरे मुझे तो यहाँ तक प्रतीत होने लगा कि विनोबाजी ने न सिर्फ भू-समस्या का हल हमारे सामने रखा है, बल्कि भूदान-आन्दोलन अहिंसक तरीके से सामाजिक-क्राति तथा समाज के नव-निर्माण का पहला कदम है। महात्माजी ने अहिंसक क्राति और नव समाज-

निर्माण के सैद्धान्तिक विचार देश और दुनिया के सामने रखे थे, लेकिन उनके जाने के बाद धीरे-धीरे यह चीज आँखो से ओझल होने लगी थी और देखने में नही आ रहा था कि उन विचारो पर कहीं अमल हो रहा हो। बल्कि होने यह लगा था कि राजसत्ता हाथ में आने के बाद उनके अनुयायियो ने गाधीजी का रास्ता छोडकर पाश्चात्य ढग के राज्यतत्र का रास्ता अख्तियार कर लिया। राज-शक्ति के द्वारा ही समाज-परिवर्तन का काम वे करना चाहते थे। यह भी दीख रहा था कि समाज-रचना का कोई स्पष्ट रूप भी उनके सामने नही था। ऐसा लगता था कि वे वर्तमान समाज मे थोडा-बहुत फेर-बदल करके उसे कायम रखना चाहते है, जैसे किसी जर्जर मकान मे इधर-उधर चिप्पी लगाकर उसे खडा रखा जाय।

इस समय मेरे मन मे एक नया चिन्तन चल रहा था। मेरे विचारो का विकास एक और ही दिशा मे हो रहा था। पहले मार्क्सवाद पर मेरी आस्था थी। लेकिन इधर कुछ दिनो से मुझे ऐसा विश्वास होने लगा था कि भौतिकवादी दर्शन के आधार पर समाजवादी समाज-रचना नही हो सकती। मुझे यह साफ दीखने लगा था कि गाधीजी का यह कहना बिल्कुल सही था कि मानव-निर्माण के बिना समाज-निर्माण असभव है और मानव-निर्माण का आधार भौतिकवाद नही बन सकता। यहाँ तक तो मेरा विचार भूदान-आन्दोलन मे प्रवेश करने के पहले पहुँच चुका था। आगे चलकर जब मुझे भूदान-आन्दोलन का अधिक परिचय हुआ, तो मैने अनुभव किया कि मानव-निर्माण अथवा मानवीय क्राति के लिए यह एक महान् प्रयास है। समाजवादी आन्दोलन में

मानव-निर्माण का कोई कार्यक्रम दीखता नही था। समाजवादी तत्र के जो नमूने दुनिया मे जहाँ-जहाँ दिखलाई पडे या जिस तत्र का स्वरूप समाजवादी विचारधारा में पाया जाता था, उससे मुझे सतोष नही था। समाजवादी समाज-रचना में राज्य-शक्ति का विस्तार होगा, ऐसा मुझे लगता था। समाजवाद को राज्यवाद से कैसे वचाया जाय, यह प्रश्न आज भी हर विचारवान समाजवादी के सामने है। इस प्रश्न का समाधानकारक उत्तर महात्माजी के विचारो और विनोवाजी के इस क्रातिकारी आन्दोलन में मुझे मिला। धीरे-धीरे मुझे विश्वास हो गया कि समाजवाद के सही उद्देश्य और सही मूल्य महात्माजी के सर्वोदय में मिलेगे। सर्वोदय की स्थापना राज-शक्ति के द्वारा नही हो सकती, वल्कि यह भूदान-आन्दोलन तथा उसी प्रकार दूसरी प्रक्रियाओ के द्वारा नैतिक, वैचारिक तथा जीवन-मूल्यो में क्राति करके ही की जा सकती है। इतनी दूर चलकर अव मै ऐसी जगह पहुँच गया था कि इस बात का सकल्प करूँ और अन्य सभी कामो से अपने को खीचकर सारा समय अहिसक क्राति द्वारा सर्वोदय-निर्माण में लगा दूं। यह मेरी मन-स्थिति थी कि जव बोधगया-सम्मेलन के मच पर बोलने के लिए खडा हुआ, तो अनायास ही सकल्प के वे शब्द मेरे मुंह से निकल पडे। मुझे ऐसा कुछ नही लगा कि मै कोई नया कदम उठा रहा हूँ।

उस समय अपने मन मे एक और विचार मै देख रहा था कि भूदान में काम करनेवाले इतने थोडे है, और उनमें भी वहुत कम लोग है, जो पूरी श्रद्धा से अपना सारा समय दे रहे हो। मुझे लगता था कि जव तक नये कार्यकर्ता वडी तादाद मे इस आन्दोलन

के विचारो और आदर्शो से प्रभावित होकर नही आते, तब तक यह आन्दोलन तेजी से नही बढता।

कार्यकर्ताओ के शिविरो और सभाओ मे यह प्रणाली चल पडी थी कि उनसे सकल्प कराया जाता था कि कौन कितना समय इस काम मे देता है। कोई कहता था सन् '५७ तक, कोई दो साल, कोई एक साल और कोई-कोई साल में एक माह या माह मे एक सप्ताह समय देने की बात करता था। मुझे लगता था कि ऐसे निर्बल सकल्प से हमारा काम पूरा होनेवाला नही है। मै अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह देख रहा था कि जो भी व्यक्ति भूदान-आन्दोलन के पीछे रहे हुए विचार को अच्छी तरह समझ लेगा, वह यह निश्चय किये बगैर नही रह सकता कि अपना सारा जीवन इसीमे खपा देना चाहिए। मेरे कहने का यह मतलब नही कि जो दो-चार वर्षो का या थोडे समय के लिए अपना पूरा या आशिक समय देते है, उनका कुछ मूल्य नही, अथवा उनसे आन्दोलन को शक्ति नही मिलती। लेकिन क्राति के लिए जिस दृढ सकल्प, लगन और आग की जरूरत है, वह यहाँ नही है, यह मानना ही पड़ेगा। क्राति-सेना की रीढ ऐसे ही लोगो से बन सकती है, जिन्होने क्राति-वेदी पर अपना जीवन-समर्पण कर दिया हो। मेरे जीवन-समर्पण के पीछे यह प्रेरणा भी थी कि इस प्रकार के जीवन-समर्पण को एक नया आह्वान किया जाय।

समाजवादी क्षेत्रो तथा देश के दूसरे क्षेत्रो मे भी यह कहा जाता है कि राजनीति से मेरे हटने के कारण राजनीति को और खासकर समाजवादी आन्दोलन को बहुत क्षति पहुँची है।

लोग ऐसा इसलिए समझते है कि आज की प्रचलित राजनीति पर ही उनका सारा विश्वास टिका हुआ है। मैने तो समझ लिया है कि जिस जगह हमें जाना है, जैसा समाज हमे बनाना है, वह आज की राजनीति से हो ही नही सकता। यह राजनीति इसमे सहायक हो सकती है, लेकिन इसका असली काम तो गाधी-विनोबा के ढग से ही हो सकता है। ऐसी स्थिति मे मेरे लिए राजनीति का स्थान गौण हो जाता है। यदि जनता भी इस विचार को समझ ले, तो उसकी दृष्टि भी आज जो राजनीतिक पक्षो और राज-केन्द्रो की ओर लगी है, वहाँ से हट जायगी और वह स्वय पर भरोसा करने लगेगी। ऐसी हालत में राजनीति के पीछे जनता नही, बल्कि जनता के पीछे राजनीति भागेगी। जन-शक्ति का निर्माण होगा, जन-क्राति जगेगी और नये समाज का निर्माण गाँव-गाँव, घर-घर से, बल्कि व्यक्ति-व्यक्ति से शुरू होगा।

कुछ लोग समझते हैं कि मेरे इस कदम से समाजवाद की शक्ति क्षीण होगी। लेकिन उसका तो सवाल ही नही उठता। सन् '५७ में अगले चुनाव होगे। उस समय तक यदि भूदान क्राति सफल हो जाती है, पाँच करोड एकड जमीन मिल जाती है, हजारो गाँवो में जमीन का ग्रामीकरण हो जाता है, नये समाज के नये विचार, नयी सभ्यता के नये मूल्य वातावरण मे व्याप्त हो जाते है, तो अगले चुनाव मे समाजवाद की बडी से बडी जीत इसके सामने फीकी पड जानेवाली है। चुनाव की जीत तो केवल राजनैतिक होगी, लेकिन भूदान-आन्दोलन की सफलता प्रत्यक्ष समाजवाद की क्राति होगी। इस क्राति से समाजवाद

की इतनी शक्ति बढ़ेगी कि जितनी समाजवादी पक्ष के दायरे मे सीमित रहकर किसी प्रकार भी बढना सभव नही है।

दु ख का विषय है कि यह विचार अभी राजनीतिक पक्षो ने समझा नही है। चाहे वे समाजवादी पक्ष के हो, चाहे काग्रेस पक्ष के हो अथवा किसी दूसरे पक्ष के ही क्यो न हो। उन्हे यह नया विचार, नयी क्राति नजदीक से और गहराई से समझनी चाहिए, ऐसा मेरा नम्र निवेदन है।

—जयप्रकाश नारायण

जीवनदान की गंगोत्री

मै आपके सामने कुछ अनिच्छा से बोलने आया हूँ। आना इसलिए पडा कि बोलने का हुक्म हुआ है, और मैने सोचा कि न बोलने से कुछ भ्रम हो सकता है। अनिच्छा इसलिए थी कि कुछ बातो से मन जरा दुखी हुआ है।

बिहारवासी होने के नाते मै अत्यन्त लज्जित होकर आपके सामने आया हूँ। बिहार ने बत्तीस लाख एकड भूमि प्राप्त करने का सकल्प किया था। हम लोगो ने बाबा को अठारह महीने तक कष्ट दिया, बिहार के गाँव-गाँव मे उन्हे घुमाया जब कि वे दूसरी जगह बडे-बडे काम कर सकते थे। यह हमारा सौभाग्य है कि उनके साथ रहने का हमे मौका मिला। परन्तु जिस कारण यह हुआ है, उस पर हम गौरव कदापि महसूस नही कर सकते। यह बत्तीस लाख एकड़ का जो सकल्प था, वह ऐसा कौन-सा

वडा सकल्प था, जो पूरा नही हो सकता था ? यहाँ की प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी ने सकल्प करके उसे अपना लिया था और यहाँ की प्रजा-समाजवादी पार्टी ने भी इस आन्दोलन का समर्थन किया था। इन दोनो पक्षो के पास कार्यकर्ताओ का अपार वल है। कार्यकर्ताओ की कोई कमी नही है। पर इतना होने पर भी क्या कारण है कि हम यह सकल्प पूरा न कर सके ? हजारीवाग जिले को छोडकर दूसरे किसी भी जिले का कोटा पूरा नही हुआ है। वहाँ भी पडती जमीन अधिक है, इसलिए कुछ ज्यादा जमीन प्राप्त हुई है। इसके क्या कारण हैं, इस पर सोचना चाहिए। विहार का ही नही, सारे देश का यह प्रश्न है।

कानून की असमर्थता

पिछले कुछ महीनो का इस आन्दोलन का मेरा जो अनुभव है, उससे मै दृढतापूर्वक कह सकता हूँ कि जिस श्रद्धा से मै इस आन्दोलन में आया, वह श्रद्धा दिन-प्रतिदिन दृढ होती जा रही है। आज देश में विवाद चलता है कि इस आन्दोलन से समस्या हल होगी या नहीं, तो वावा विनोद में कह देते है कि समस्या हल होने के पहले कही मेरी ही समस्या हल न हो जाय। लेकिन अपने प्रत्यक्ष अनुभव से मै इस नतीजे पर आया हूँ कि केवल भूमि की ही नही, वल्कि जीवन और समाज की सारी समस्याएँ हल करने की शक्ति इस प्रक्रिया मे है। हमारे कुछ मित्र-सुहृद्, जो यहाँ पर आये है, वे कहते है कि यह सवाल तो कानून से ही हल हो सकता है। इस मान्यता पर सव लोग एक ही स्थान पर खडे है। काँग्रेसवाले, प्रजा-समाजवादी, कम्यूनिस्ट, सव कहते है

कि यह समस्या तो कानून से ही हल होगी, बाबा तो केवल हवा तैयार कर रहे हैं। लेकिन मेरा यह खयाल है कि कानून इस समस्या के सामने अपने को अशक्त पायेगा। कानून के जरिये यह समस्या हल नहीं हो सकती। जमीन के बँटवारे का सवाल तो कानून के जरिये हल हो सकता है, परन्तु इसमें कई जटिल प्रश्न ऐसे हैं, जिनका उत्तर कानून नहीं दे सकता। कानून से जमीन का बँटवारा भले ही हो जाय, परन्तु क्या जमीन के बँटवारे के लिए ही यह आन्दोलन हो रहा है? जो कार्यकर्ता है, वे जानते हैं कि यह आन्दोलन तो गहराई में जाने के लिए हो रहा है। सारे जीवन को पलटने के लिए यह आन्दोलन हो रहा है। क्या कानून कभी यह सिखा सकता है कि अमुक पर प्रेम करो? और कानून के कारण क्या कोई प्रेम करता है? क्या कानून कभी यह भी सिखा सकता है कि अच्छे बनो और क्या कोई कानून के कारण अच्छा बन भी सकता है? क्या कानून से छुआछूत की समस्या हल हुई है या आज छोटी-छोटी बच्चियों की जो शादियाँ हो रही हैं, उनको उससे हल किया जा सका है? यह तो सब जन-शक्ति से, जनता का विचार बदलने से ही हो सकता है। यदि उसके पीछे जनता की सम्मति न हो, तो कानून पगु बन जाता है।

हमारा अन्तिम ध्येय यह है कि गांव की सारी भूमि सबकी बने। उस पर सारे गांव का स्वामित्व रहे। सारा गाँव उसका मालिक बने। क्या यह सारा कानून से हो सकता है? किस दल में यह शक्ति है कि वह कानून से यह सब करा ले?

कानून बनानेवाले में एक शक्ति तलवार की भी होती

है, परन्तु तलवार से एक समस्या हल होती हुई दिखाई देती हो, तो दूसरी दस समस्याएँ खडी होती है। अत तलवार का भी काम यहाँ पर चलनेवाला नही है। उससे यह काम हर्गिज नही हो सकता है। यह काम तो उसी पद्धति से हो सकता है, जैसे आज हो रहा है। दूसरी किसी भी पद्धति से वह नही हो सकता।

मेरा दुःख

वहुत दु ख के साथ यह कहना पडता है कि हम एक पक्ष में है, इसलिए काँग्रेसवालो के और हमारे वीच एक दीवार खडी हुई है। इसमे मेरा दोप हो सकता है, परन्तु चाहे जितनी कोशिश करने पर भी मालूम होता है कि यह दीवार तो है ही। समाजवादियो ने भी इस आन्दोलन का समर्थन किया है। परन्तु मै देखता हूँ कि जव मै घूमता हूँ, तब तो हमारे साथी लोगो में जरा कुछ हलचल पैदा होती है और वे दौड-धूप करने लग जाते है, लेकिन जहाँ मेरा दौरा खतम हो जाता है, वहाँ वे घर मे चले जाते है और ठढे पड जाते है। मैने उनको यह कहते भी सुना है कि "जयप्रकाश तो अब गाधीवादी, सुधारवादी वन गया है। वह अव क्रान्तिकारी नही रहा है। क्या कभी दान माँगकर जमीन का मसला हल हो सकता है?" यह सुनकर दु ख होता है। वावा ने भी कई दफा इस वारे मे कहा है, पर अव तो उन्होने वह कहना भी छोड दिया है। जव कोई देखता है कि उसके कहने से कोई परिणाम नही होता है, तो कहना छोड देता है। वावा कहते थे कि "यह कैसी सेना

है कि जिसका सेनापति तो आगे बढ़े और सेना पीछे ही रहे।"

अगर दोनों पक्ष जुट जाते!

बिहार में कांग्रेस और समाजवादी, दोनो पक्षो मे काफी कार्यकर्ता है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं की बात तो मै नहीं करता, क्योंकि वे लगन और सातत्य से यह कार्य कर रहे है। परन्तु यदि काँग्रेस और प्रजा-समाजवादी दल के कार्यकर्ता इस काम मे जुट जाते, तो वे इतना काम कर पाते कि जो कानून से दस वर्षो मे भी नही हो पाता। तब तो बत्तीस लाख एकड़ का कोटा जरूर पूरा हो जाता। लेकिन बाबा गया मे एक बार, दो बार, तीन बार आये और अब चौथी बार आये है। मै भी यहाँ तीन बार यात्रा कर चुका हूँ। तो हर बार यही अनुभव आता है कि हमारे दौरे के समय, या अनुग्रह बाबू, कृष्णवल्लभ बाबू, श्रीबाबू, इनमे से किसीका भी दौरा हो, तो लोग दौड़-धूप करते है, दानपत्र इकट्ठा करते है और दौरा खतम होने के बाद फिर से ठंढक हो जाती है। एक बार ज्वार उठे और गिर जाय, तो उसे फिर से ऊपर उठाना कठिन हो जाता है।

—

आत्मसंशोधन का क्षण

१९५२ के दिसम्बर महीने मे मेरा गया मे पहला दौरा हुआ था। उस समय जो छह हजार एकड के दान जाहिर हुए थे, उनमे से अभी तक तीन हजार एकड़ के दानपत्र भी प्राप्त नही

हुए है। जमीन माँगी हुई है, मिली हुई है, सिर्फ दान-पत्र भरवाना बाकी है। लेकिन यह भी अब तक नही हुआ है। इसका 'दोष किसे दे? दान देनेवाले का दोष नही है, दोष तो हमारा है। इसका मतलब यह नही कि दान माँगने पर हमेशा वह मिल ही जाता है। कभी-कभी हम छठा हिस्सा माँगते है, तो देने-वाला बीसवाँ हिस्सा देने के लिए तैयार होता है। और कभी-कभी मजबूर होकर हमारे कार्यकर्ता उसे स्वीकार भी कर लेते है। माँगने पर हर कोई छठा हिस्सा ही देता है, यह बात तो नही है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि उसकी वजह से हमारा दिल ही टूट जाता है। इन सब बातो के होते हुए भी मै ढिठाई से कहना चाहता हूँ कि अगर हम लोगो ने निरतर काम किया होता, तो आज हम गौरव के साथ एलान कर सकते थे कि बत्तीस लाख अच्छी जमीन और बीस-पचीस लाख दूसरी जमीन प्राप्त हुई है। गया में काफी शक्ति लगी और यहाँ पर काफी जमीन मिली। क्या गया जिले के लोग अच्छे दानी है और पटना, शाहाबाद, मुंगेर आदि जिले के लोग कुछ कम दानी है? ऐसी बात नही, लोग तो हर जगह एक-से होते है। हर जगह कजूस भी होते है और दानी भी होते है। तो भी गया जिले में ज्यादा काम हुआ और दूसरे जिलो मे नहीं हुआ, इसका कारण यही है कि हमने काम नही किया। आप सब लोग हजारो की तादाद में यहाँ पर आये हुए है। आप अपनी छाती पर हाथ रखकर अपने मन से पूछिये कि चाडिल-सम्मेलन को कितने महीने बीते? इन दिनो में आपने भूदान के काम के लिए कितना समय दिया और कितनी लगन से आपने काम किया? अगर

आगे भी ऐसा ही काम करोगे, तो फिर काम पूरा होने की क्या आशा रखी जा सकती है?

पक्षवालों से

आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि कार्यकर्ता उत्साह और लगन से काम कैसे करे? यहाँ पर जो भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्ष है, उनके पास कार्यकर्ता भी है। पर उनके अपने कार्य भी होते है और भूमिहीनो को सीधे भूमि देने का यह प्रत्यक्ष काम न करके असेम्बली और पार्लियामेंट मे जाकर और वहाँ कानून बनाकर, द्राविडी प्राणायाम करके गरीबों को भूमि देने का काम करने का ही वे सोचते है। परन्तु हम तो आज प्रत्यक्षत वही काम भूदान के द्वारा कर सकते है। जैसे तलवार से प्रत्यक्ष काम होता है, उसी तरह बिना तलवार के, बिना कानून के, जमीन माँगकर लाखो-करोडों भूमिहीनो को जमीन देना कम महत्त्व की बात नही है। परन्तु पक्षवाले लोग इस बात को नही समझते है और जो झगडे चलते है, उन्हीको ये अधिक महत्त्व देते है। यह दुर्भाग्य की बात है। मै आशा करता हूँ कि धीरे-धीरे हमारा दिमाग बदलेगा और राजनैतिक पक्षो के लोग इस आन्दोलन में आयेंगे। जैसे-जैसे इसके क्रान्तिकारी और मगल स्वरूप का दर्शन होता जायगा, वैसे-वैसे हम लोग आते जायँगे। परन्तु यहाँ से हम सब यह समझकर अपनी जगह जायँ कि जिन पक्षो के लोगो ने इसका समर्थन किया है, अगर लगन से काम नहीं करेंगे, तो वे अपने को ही धोखा देंगे।

पक्षों की दृष्टि छोड़ें

पक्षो के लोग भूदान का काम इस दृष्टि से न करें कि इससे उनके पक्ष की प्रतिष्ठा बढती है, बल्कि इस दृष्टि से करे कि इससे प्रत्यक्ष रूप से गरीबो को भूमि मिलती है। प्रत्यक्ष गरीबो को भूमि मिल जाती है, इसीमें क्या सबकी प्रतिष्ठा नही आती है? हमें इस काम से कोई नेतागिरी तो नही करनी है। इससे कोई असेम्बली या पार्लियामेंट की सीट मिलेगी, अपने पक्ष का हित सधेगा, इस दृष्टि से भी काम नही करना चाहिए। बल्कि हमे तो इस आन्दोलन के ऊँचे आदर्शो को सामने रखकर, इसके बुनियादी उसूल ध्यान में रखते हुए पक्ष-रहित भाव से ही यह काम करना चाहिए।

युग का तकाजा

जब हम कहते है कि तेजी से काम करना चाहिए, तो कुछ लोग आक्षेप उठाते है कि इधर तो आप हृदय-परिवर्तन की बात करते हो और उधर कहते हो कि तेजी से काम करो, तो इन दो बातो में कैसे मेल बैठता है? लेकिन जमाना है, जो हमें आवाहन कर रहा है कि तेजी से काम करो, नही तो आपके पीछे जो लोग खड़े हैं, वे आपकी छाती पर चढकर आगे बढेंगे। उनके हाथ में तलवार है। इसलिए अहिंसा के लिए बहुत कम समय बचा है। इतिहास यह राह नही देखेगा कि भारत में एक सत अहिंसा का प्रयोग कर रहा है, तो जल्दी नही करनी चाहिए।

जीवन-दान !

तो कार्यकर्ताओ की संख्या कैसे वढे, इस प्रश्न पर हमें सोचना है। किस तरीके से नये कार्यकर्ता इस तरफ खीचे जा सकते है, इस पर सोचना है। जिस आन्दोलन मे नये कार्यकर्ता खीचने की शक्ति नही होती है, उसमे आन्तरिक शक्ति नही है, ऐसा कहना पडेगा। परन्तु हम कहते है कि इस आन्दोलन मे तो वडी शक्ति है। पिछले साल चाडिल-सर्वोदय-सम्मेलन मे जो प्रस्ताव पेश किया गया था, उसमे तरुणो से और खासकर विद्यार्थियो से अपील की गयी थी कि कम-से-कम एक साल का समय भूदान-यज्ञ के लिए दीजिये। अव हमें सोचना है कि क्या इस तरह एक साल या पाँच साल देने से काम चलेगा? इसमे तो **जीवन-दान** ही देना होगा। ऐसे जीवन-दानी कार्यकर्ताओ का आवाहन इस सम्मेलन से होना चाहिए। मै ऐसे कार्यकर्ताओ को आवाहन करता हूँ; यद्यपि आज मेरी वाणी वहुत शिथिल है। चाडिल-सम्मेलन के वाद अखवारो में रिपोर्ट आयी थी कि जयप्रकाश ने पार्टी छोडकर एक साल तक भूदान का काम करने का निश्चय किया है। उस समय मैने वैसा कुछ नही कहा था। एक साल, दो साल देने की कोई वात मैने नही कही थी। लेकिन आज मै यह कह रहा हूँ कि मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त है कि मेरा नाम उन जीवन-दानी कार्यकर्ताओं में शामिल है।

—जयप्रकाश नारायण

आशीर्वाद

अभी हम लोगो ने एक व्याख्यान सुना, जिसमें हृदय बोल रहा था। मुझे रुक्मिणी की पत्रिका का स्मरण हुआ। रुक्मिणी ने भगवान् श्रीकृष्ण को एक पत्रिका लिखी थी। उसमें रुक्मिणी भगवान् को लिखती है "चाहे मुझे सौ जन्म लेने पडे, तो भी मै लूंगी और प्राणो का परित्याग करती रहूँगी, शरीर को कृश करती हुई, लेकिन तुझको ही वरूँगी।" हृदय को बहुत सुख होता है, ऐसे मगल निश्चय का वाक्य सुनकर। मैंने तो माना है कि यह यज्ञ सफल होते-होते हमारे जीवनो को ही सफल बनायेगा।

आज की राजनीति की छोटी निगाह

आप लोग जानते है कि भगवान् श्रीकृष्ण एक बडे राजनीतिज्ञ थे। उन्होने गीता मे कह रखा है कि हममें सत्कार्य करते हुए अपने लिए उससे कोई लाभ पाने की या दूसरे किसी तरह से कोई स्वार्थ साधने की वृत्ति नही होनी चाहिए। पर इन दिनो के छोटे-छोटे राजनीतिज्ञ हमें सुनाते है कि राजनीति में यह विचार नही चलता है, राजनीति में तो जो भी कोई छोटा-मोटा सत्कार्य किया जाय, उससे पूरा फल पाने की कोशिश करनी चाहिए। जैसे कोई दुग्ध-प्रेमी गाय को दुहते है, तो आखिरी बूंद तक दुहते है, वैसे ही हमें भी करना चाहिए। हमारा जो भी सत्कार्य होगा, उसका हमे पूरा-पूरा लाभ उठाना है। आज के राजनीतिज्ञ ऐसी बात कहते है, पर जिनकी वाणी से गीता निकली, वे भी तो बडे राजनीतिज्ञ थे। मैंने भिन्न-भिन्न पक्षो के नेताओ को और

सेवकों को बहुत समझाने की कोशिश की है कि छोटी नजर से मत देखियेगा, कुछ दीर्घ दृष्टि से सोचियेगा और इस काम मे अपने लिए या अपना जो माना हुआ पक्ष है, उसके लिए कोई लाभ उठाने की नीयत मत रखियेगा। इस तरह समझाने की मैंने बहुत कोशिश की है। कुछ नेताओ से मैंने एकात मे बात भी की है और मुझे कृतज्ञतापूर्वक कबूल करना चाहिए कि उन्होने मेरी बात बहुत गौर से सुनी और वे कबूल भी करते है कि वह बात ठीक है। परन्तु वे कहते है कि हमे कुछ आदत हो गयी है और उस आदत के कारण पुराने ढग से काम हो जाता है। ऐसे जो भी लोग है, मेरे मन मे उनके लिए करुणा है। मै उन्हे दोष नही देता।

रचनात्मक कार्यकर्ताओं से

पर जब मै देखता हूँ कि हमारे जो रचनात्मक काम करने-वाले कार्यकर्ता है, उनके बीच भी छोटे-छोटे अहकार काम करते है, एक-दूसरे के विषय मे शकाशीलता बनी रहती है, दूरी भाव होता है, तब मुझे उसका दु ख होता है। मै मानता हूँ कि हम लोग, जो गाधीजी के नाम पर काम करते है, रचनात्मक काम को जिन्होने अपना स्वधर्म माना है, वे अगर सब अहंकार छोडकर परिशुद्ध भाव से काम करें, तो जिन्हे हर चीज मे कोई-न-कोई लाभ उठाने की आदत हो गयी है, वे लोग भी धीरे-धीरे अपनी आदत को छोडेंगे और शुद्ध भावना से काम करेंगे। इसलिए इस विषय मे मै निराश नही हूँ। हमे शुभ सकल्प करना चाहिए।

जयप्रकाश का अनुकरण करें

दीख तो यह रहा है कि इस एक काम से बहुत से दूसरे काम करने का मौका सहज ही मिलनेवाला है। उस दिन मैंने कहा था कि मुझे मालूम नही कि भूदान-यज्ञ हमे कहाँ से कहाँ ले जायगा। किन-किन कामो की प्रेरणा देगा, कितना विशाल उद्योग यह हमसे करायेगा, इसकी कल्पना आज नही की जा सकती। परन्तु मै फिर से परमेश्वर को साक्ष्य रखकर आप सब लोगो के सामने अपनी प्रतिज्ञा दुहराता हूँ। इस काम में हमें काया, वाचा, मन और बुद्धि, सब लगा देनी है। कार्यकर्ता भी हमें बहुत-बहुत मिलनेवाले है। आज एक सकल्प प्रकट हुआ है। उस कारण जो भान हुआ है—आत्मा की शक्ति का, वह हमारे लिए बडी भारी थाती है। एक बडी कमाई हासिल हुई है। दीख पडेगा कि जवानो को गये साल जो आवाहन किया गया था, उसका परिणाम इसके आगे बहुत वेग से सामने आयगा। वह परिणाम प्रत्यक्ष दिखेगा। मै चाहता हूँ कि हम सब लोग ऐसे ही दृढ-सकल्पी बनें, जैसे जयप्रकाश बाबू हुए है।

—विनोबा

जीवन-समर्पण

[दो ऐतिहासिक पत्र]

(१)

[सम्मेलन की अध्यक्षा श्री आशा बहन को लिखा हुआ पत्र]

प्रिय आशा बहन,

बाबा का एक पत्र आया है, जो साथ भेज रहा हूँ। जिन्होंने हम सबको प्रेरित किया है, वे ही मुझ जैसे नाचीज को जीवन-दान करें, इस पर कुछ कहा नहीं जाता। इतना ही कहूँगा कि इस अमूल्य दान को स्वीकार कर सकूँ, इसके लिए सर्वथा अयोग्य हूँ। हमें तो जीवन-दान, भगवान् के नाम पर, बाबा को ही करना है।

सर्वोदयपुरी, (बोधगया) आपका विनीत

२०-४-'५४ जयप्रकाश

(२)

[*श्री विनोबा का पत्र*]

श्री जयप्रकाश,

कल आपने जो आवाहन किया था, उसके जवाब में—

भूदान यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान

अहिंसक क्रान्ति के लिए

मेरा जीवन समर्पण।

सर्वोदयपुरी, (बोधगया) —विनोबा

२० अप्रैल, १९५४

जीवनशुद्धि का संकल्प

(१)

जब जयप्रकाश बाबू ने बडे प्रेम से, विनय से, सद्भाव से, हम लोगो के सामने जीवन-दान की बात रखी, तो मै पिघल गया। सुबह उठते ही मै सोचने लगा कि मुझे भी इसमें कुछ करना चाहिए। मैंने पत्र लिखा—'भूदानयज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति के लिए मेरा जीवन समर्पण।'

इसमे कोई नयी बात तो मैंने नही की, पर अपना एक पूरा साध्य मैंने शब्दो में रख दिया—लिख दिया। केवल इन शब्दो में मैंने अपनी प्रतिज्ञा आप लोगो के सामने दुहरायी। जैसे दार्शनिको को बिना शब्द-सिद्धि के समाधान नही होता, वैसी ही मेरी हालत है। इसलिए ठीक शब्द सोचने में कुछ समय लग गया। इसमे जो चन्द शब्द रखे है, उन पर भाष्य लिखा जा सकता है।

इस तरह एक प्रकार से कहा जा सकता है कि इस लिखने मे मेरे लिए कोई नयी चीज नही। लेकिन खुद इसमे बहुत ही नयी चीज थी, जिसका इशारा हमारे मित्र आचार्य कृपालानी ने गत १९ अप्रैल, १९५४ को सर्वोदयपुरी के अपने सायकालीन प्रवचन में किया। उन्होने बडे ही सूचक और अहिंसात्मक ढग से सुझाया कि 'भाई, जीवन-दान तो करते हो, लेकिन इसका खयाल रखो कि गन्दी चीज तो अर्पण नही करते। अगर शुद्ध वस्तु अर्पण करनी है, तब तो जीवन-दान का विचार अच्छा है।' फिर भी ध्यान रहे कि जो जीवन-दान का विचार और सकल्प

करेगा, वह कचरे का दान तो नही कर सकता। इस वास्ते उस सकल्प का अर्थ भी जीवन-शुद्धि का ही सकल्प होता है।

कुछ लोगो को आचार्य कृपलानी का यह कहना मजाक ही लगा। पर वात ऐसी नही है। वह एक हृदय की और समझने की वात है। जो साहित्यिक और कला-रसिक होते है, वे अपनी वात ऐसे ढग से रखते है कि उसमे कोई उपदेश दिया तो किसीको उसका आभास भी नही आ पाता, फिर भी उपदेश की पूर्ति हो जाती है।

हम-आपने परस्पर के समक्ष एक-दूसरो को साक्षी रखकर जीवन-अर्पण की जो प्रतिज्ञा की, वह जीवन-शुद्धि की भी प्रतिज्ञा है। और यही हमारे लिए विशेप वात हो जाती है। हमने अपना जीवन अव तक इस काम मे और इसी तरह के दूसरे सार्वजनिक कामो मे लगाया—ऐसा ही कहा जायगा। मेरे लिए तो जरूर ही कहा जायगा कि मैने सिवा सार्वजनिक सेवा के कोई काम किया ही नही है। फिर भी भूदान-यज्ञ-आन्दोलन जैसे एक विलकुल ही वुनियादी आन्दोलन के लिए, जिसमे काया पलटने का माद्दा है, जव हम जीवन-दान करते है, तो अभी तक चित्त-शुद्धि का जितना खयाल हमने रखा, उससे वहुत ज्यादा चित्त-शुद्धि का खयाल रखने की जरूरत है। इसीलिए इसमे हमारे लिए नयी चीज है।

भगवान् शकराचार्य ने लिखा है कि 'भिक्षा मे जो मिले, वही खाना चाहिए।' वे उसकी खूवी वताते थे कि 'भिक्षा एक वडी साधना है, कारण कोई भिक्षा न दे तो उससे सुख होता है या दुख? और अगर कोई भिक्षा दे तो उसका चित्त

पर क्या असर होता है ?—यह भिक्षा माँगनेवाले को रोज देखने को मिलता है।' अच्छी भिक्षा मिली, तो क्या भावना हुई और रद्दी मिली या कुछ भी न मिली तो क्या भावना हुई ? आदर के साथ मिली तो क्या और अनादर के साथ मिली तो क्या भावना हुई ? मानो रोज का खाना—वह भिक्षा माँगना, लेबोरेटरी (प्रयोगशाला) का एक प्रयोग ही हुआ। भिक्षा से यह देखने का मौका मिलता है कि उससे चित्त पर कैसा असर होता है ? इस तरह विश्लेषण कर उन्होंने कहा है कि सन्यासी के लिए बड़ा ही शुभप्रद कार्य-क्रम है।

इसी भिक्षा का कार्य-क्रम हमारे पास है। हम जमीन माँगने जाते है तो कोई उसे देता है, तो कोई गाली भी सुनाता है, कोई आदर करता है तो कोई अनादर भी, कोई कम देता है, कोई ज्यादा तो कोई ठगने की भी नीयत रखता है। प्रकृति में ऐसी पचासो प्रकार की वासनाएँ, भावनाएँ पायी जाती हैं। लेकिन हमारे मन मे यह दृढ निश्चय रहा कि 'ये सारी भावनाएँ आत्मा में कतई नही' तो हम बावजूद ऐसे अनुभवो के शान्त, अविचल ही रहेंगे। हमारी वाणी से कोई बेजा बात नही निकलेगी, अविनय का शब्द नही निकलेगा।

रोज भिक्षा माँगने का यह धधा जिन्होने शुरू कर दिया, उन्हे अगर हर्ष, शोक आदि प्रसगो का रोज अनुभव आयगा, तो स्पष्ट है कि आत्म-परीक्षण के लिए भी उन्हे रोज मौका मिलेगा। यह हमारे लिए बड़ा उपयोगी कार्यक्रम है और इसमें ऐसे आत्म-शोधन की बहुत जरूरत है। इस दृष्टि से जिन्होने जीवन-

दान दिया—यद्यपि उनमे कुछ लोग ऐसे जरूर है जो पहले से ही काम करते और बरसो से काम करते है, और कुछ नये भी है, फिर भी—उनमे जो पुराने है, उनके लिए भी यह प्रतिज्ञा नयी प्रतिज्ञा हो जाती है।

सर्वोदय सम्मेलन, बोधगया —विनोबा
२० अप्रैल, १९५४

(२)

जीवन-दान का आन्दोलन उठाकर हमने अभी जीवन-शुद्धि की साधना मे पहला ही कदम बढाया है। अभी तो हमे बहुत दूर जाना है। हमे अहकारशून्य होकर काम करना होगा। जीवन-दान देकर भी जो अपने को किसी विशिष्ट जाति के समझे और कहे कि 'हम तो जीवन-दानी है, तो उनका यह कहना अहकार ही होगा। जीवन-दान का गर्व भी नही होना चाहिए। पहले भी ऐसे लोग थे, जिन्होने अपना सारा जीवन भूदान-यज्ञ के कार्य मे देने का सकल्प किया था। इसलिए अब हम लोगो ने जो जीवन-दान दिया, उस पर अहकार करने का हमे कोई अधिकार नही है। अहकार-रहित होकर हम इस बात को समझे कि हम जो कर रहे है, ईश्वर को अर्पित कर रहे है। वास्तव मे हम उसकी वस्तु उसीको सौंप रहे है। उसीकी पूजा मे जीवन लगाने का हमने निश्चय किया है, इस वृत्ति से कार्य करना होगा। रास्ते मे बाधाएँ आयँगी, तकलीफे आयँगी, प्रलोभन भी आयँगे, पर उनसे हमारी परीक्षा ही होगी।

एक बात मै आपसे अवश्य निवेदन करना चाहता हूँ। आपने जब अपना सारा जीवन इस पुण्य-कार्य मे लगाने का निश्चय

किया है, तो उसके फलस्वरूप कोई ज्यादा या कोई बडी वस्तु आपको मिल सकती है, ऐसी धारणा या विचार आपके मन मे नही उठना चाहिए। जिन्होने जीवन-दान दिया है, उनका किसी चुनाव मे भाग लेना, किसी पद की लालसा रखना या पैसे कमाने की इच्छा रखना कोई अर्थ नही रखता। जीवन-दानियो मे ऐसे जो लोग है, जिनका राजनीति से सम्बन्ध है, और जो किसी पक्ष के सदस्य है, उनके बारे मे मेरा तो विचार है कि वे सदस्यमात्र ही रहें, और अपने पक्ष के चुनाव मे भी वे भाग न ले। उन्हे जीवन भर के लिए हर प्रकार के चुनाव से अलग रहना चाहिए और यह सब भी हमें इस भाव से नही करना चाहिए कि हम कोई त्याग कर रहे है। बल्कि इस भाव से करना चाहिए कि जो काम हम कर रहे है, वह एक महान् काम है और ऐसा काम करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए हम इसीमें आत्म-सन्तोष माने।

सर्वोदय सम्मेलन, बोधगया   —**जयप्रकाश नारायण**
२० अप्रैल, '५४

जीवनदान क्यों ? : २ :

वोधगया-सर्वोदय-सम्मेलन एक नये आन्दोलन के आरंभ के कारण उल्लेखनीय हुआ। वह आन्दोलन है—'जीवन-दान'। जव से विनोवाजी ने भूदान-आन्दोलन शुरू किया, तव से उसमे से साधन-दान, सम्पत्ति-दान, वुद्धि-दान, श्रम-दान, प्रेम-दान आदि अनेक शाखा-प्रशाखाएँ निकली। मूल आन्दोलन के ये सव स्वाभाविक विकास ही थे। वल्कि यह कहना चाहिए कि ये सव आरम्भ ही से भूदान-आन्दोलन मे निहित और अन्तर्भूत थे। इसी प्रकार जीवन-दान भी उसीमे निहित था और जव कि परिस्थिति परिपक्व हुई और उसकी आकाक्षा पैदा हुई, तव वह अकुरित हुआ। सच तो यह है कि ऐसी स्थिति पैदा हो गयी थी कि आन्दोलन को अनुप्राणित करने के लिए जीवन-दान का उदय न होता तो शायद, वह आन्दोलन उन्नत भूमिका पर नही पहुँचता।

आन्दोलन की इस प्रगति मे थोडा हाथ मेरा भी रहा है। इसलिए मै सक्षेप मे उसे समझाना चाहता हूँ। इधर जो आलोचनाएँ निकली है, उनसे मालूम होता है कि जीवन-दान आन्दोलन को लोगो ने भलीभाँति समझा नही है। मेरे अपने विपय मे व्यक्तिगत सफाई देने की वहुत कोई वात नही है और न उसकी जरूरत ही है। इतना कह देना काफी होगा कि मैने जो निर्णय

किया वह उस क्षण के आवेश मे नही किया। महीनो पहले से धीरे-धीरे मै उसकी तरफ प्रेरित हो रहा था। और न यही समझना चाहिए कि उस कदम को उठाकर मैने उन सब आदर्शो को तिलाजलि दे दी, जिन पर मै चिरकाल से स्थिर था। बल्कि इस कदम का मतलब यह है कि मुझे यह महसूस हो गया कि मेरे आदर्शो की सिद्धि और सरक्षण भूदान अथवा गाधीजी के मार्ग से अधिक अच्छी तरह हो सकता है।

जीवन-दान का आशय

जीवन-दान का सम्पूर्ण आशय क्या है? किसी एक महान् कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देना कोई नयी बात नहीं है। बोधगया मे जिन्होने जीवन-दान की घोषणा की, उनमे से भी कई ऐसे है, जिनका जीवन पहले से ही समर्पित है। क्या उनके लिए पुन समर्पण की आवश्यकता थी? और फिर इस तरह जीवन-समर्पण करनेवाले के लिए राजनीति से अलग रहना क्यो जरूरी समझा गया? ये और इस तरह के और भी सवाल उठते रहते है। मै उनका जवाब देने की कोशिश करूँगा।

सबसे पहली बात यह है कि किसी सत्कार्य के लिए जीवन उत्सर्ग करने से 'जीवन-दान' करना कोई भिन्न वस्तु नही है। किन्तु यहाँ जीवन-दान शब्द का प्रयोग एक कार्यविशेष को जीवन अर्पित करने के अर्थ में किया गया है। पर यह समर्पण सिर्फ भूदान के लिए नही, जैसा कि अक्सर बतलाया जाता है, बल्कि भूदान मे जिन-जिन बातो का समावेश होता है, उन सब

बातो के लिए है । बोधगया मे जो लोग इकट्ठे हुए थे, उनमे से करीब-करीब सभी किसी-न-किसी अर्थ मे जीवन-दानी थे। याने राजनीति, खादी-ग्रामोद्योग, नयी तालीम, अछूतोद्धार, धर्म या अन्य किसी कार्य को अपना जीवन दे चुके थे। जब उनमे से कुछ लोगो ने मेरे आवाहन के उत्तर मे अपना नाम जीवनदानियो में लिखाया, तो उसका यह मतलब नही था कि फिर उसी काम को करते रहने का सकल्प वे दुहरा रहे थे और इस तरह वे अनावश्यक एव निरर्थक प्रदर्शन कर रहे थे । इसके विपरीत उनके जीवन-दान का यह अर्थ था कि भूदान-आन्दोलन का अब उन्हे इतना स्पष्ट और समग्र दर्शन हुआ है कि वे दूसरे सारे काम, यहाँ तक कि राजनीतिको भी छोडकर भूदान को अपना जीवन समर्पित करने के लिए प्रेरित हुए ।

अहिंसक क्रान्ति का अग्र-चरण—भूदान

इस तरह प्रोत्साहित होने के लायक हम भूदान में क्या देखते है ? ऊपर-ऊपर से देखनेवालो के लिए तो यह महज भूमि-सुधार का एक आन्दोलन है, जो अधिक से अधिक कानून के लिए जमीन तैयार कर रहा है। पर जिन्होने गहराई मे उतरने की कोशिश की है, उनके लिए यह आन्दोलन बडा आशय रखता है। वह एक चौमुखी सामाजिक और मानवीय क्रान्ति का उपक्रम है—मानवीय इस अर्थ मे भी कि समाज के साथ-साथ आदमी को बदल देने का इरादा वह रखता है। महात्मा गाधी की अहिसक क्रान्ति-प्रक्रिया का वह सार्वजनिक रूप से प्रयोग करता है। प्यारेलालजी के शब्दो मे 'वह अहिसक क्रान्ति के लिए व्यूह भेद

करनेवाला अग्रचरण है। और उसके परिणाम बहुत व्यापक होगे।'

जैसा कि विदित है, गाधीजी की प्रक्रिया मत-परिवर्तन की प्रक्रिया थी। वे न केवल नयी सभ्यता के निर्माण मे हिसा को वर्जित करना चाहते थे, वरन् प्राथमिक साधन के रूप मे कानून का भरोसा भी नही करना चाहते थे। 'आगा खाँ महल' मे उन्होने प्यारेलालजी से कहा—'जब तक हमारे हाथो में सत्ता नही है, तब तक तो विवशता के कारण मत-परिवर्तन हमारा साधन है। लेकिन जब हमे सत्ता प्राप्त हो जायगी, तब मै चाहूँगा कि मत-परिवर्तन हमारा स्वेच्छा से स्वीकृत साधन हो। कानून से पहले मत-परिवर्तन, यह क्रम होना चाहिए।' अनुनय से हृदय-परिवर्तन, मन परिवर्तन, नवीन सामाजिक मूल्यो का निर्माण और उनके अनुरूप लोकमत के वातावरण का निर्माण, जहाँ अनुनय-विनय पर्याप्त साबित न हो, वहाँ अन्याय के साथ असहयोग—ये गाधीजी के अस्त्र थे। उनसे द्विविध प्रयोजन सिद्ध होता था—वे समाज-परिवर्तन करते थे और व्यक्ति-परिवर्तन भी। कानून पहली बात कर सकता है, दूसरी नही। कानून से किसी हृदय या मन का परिवर्तन नही हुआ है। जबर्दस्ती से कोई व्यक्ति सद्गुणी नही हुआ है। गाधीजी की मत-परिवर्तन की प्रक्रिया का आधार उनकी यह श्रद्धा थी कि मनुष्य की उन्नति हो सकती है। इस श्रद्धा का आधार दूसरी एक श्रद्धा थी और वह यह कि सभी मनुष्य, चाहे उनमें बाहरी भेद कितना ही क्यो न हो, बुनियादी तौर से अपने मे अच्छे है। क्या सबके सब ईश्वर के उसी तेजोमय और दिव्यलोक से नही आये है, जो कि हमारा परम निधान है?

गांधी-विचार का पुनर्जीवन

आज के समाज को सुधारने के लिए गाधीजी अपनी प्रक्रिया का प्रयोग कैसे करते, यह कौन कह सकता है। किन्तु जैसा कि प्यारेलालजी ने कहा है, 'गाधीजी का विचार आज पुनर्जीवित हुआ है। विनोवा उसका अनुवर्तन कर रहे है और उसमे उन्हे आश्चर्यजनक सफलता मिली है। वापू भविष्यवाणी की तरह जिस मूलगामी सामाजिक जाग्रति की चर्चा किया करते थे, उसीका आरंभ आज हम देख रहे है।'

इस प्रकार भूदान-यज्ञ व्यापक रूप से मत-परिवर्तन और नये मूल्यो तथा नये वैचारिक वातावरण के निर्माण का एक जन-आन्दोलन है। वह लोगो के चित्त और उनके पारस्परिक व्यवहार में जीवित और तत्काल क्रान्ति पैदा करता है। शोषण और असमानता की पद्धति मे वह अभी का अभी परिवर्तन करने के लिए उस पर प्रहार करता है। अपने पास जो है, उसमे दूसरो को शामिल करने की शिक्षा वह मनुष्यो को देता है।

आरंभ भूमि से क्यों ?

इस क्रान्तिकारी प्रक्रिया का आरभ भूमि के क्षेत्र के वदले दूसरे किसी क्षेत्र मे भी हो सकता था। किन्तु यह क्षेत्र सवमे पहले इसलिए लिया गया कि—

(अ) भूमि उत्पादन का एक मूलभूत साधन है।

(आ) जमीन की समस्या का हल सवसे जरूरी है।

(इ) हमारे कृषि-प्रधान देश मे अधिकाश जनता का उसके साथ सीधा सम्बन्ध है। किन्तु सवमे वडा कारण यह है कि

भूमि के द्वारा इस नयी सामाजिक नीति और आर्थिक विचार का प्रवेश कराना दूसरी किसी भी सम्पत्ति के माध्यम की अपेक्षा कही अधिक आसान था।

भूदान-यज्ञ जमीन के बारे मे जो कहता है, वह गाधीजी के मत से हमारी सभी प्रकार की सम्पत्तियो के लिए लागू है, जिसमें हमारा ज्ञान और कला-कौशल भी शामिल है।

सारी सम्पत्ति समाज की ही उपज है और समाज के सहयोग के बिना किसी भी तरह का उपार्जन असभव है। इसलिए हमारे पास जो कुछ है, वह समाज का है। जो कुछ हमारे पास है, उसके हम केवल 'थातीदार' है। समाज ने मानो अव्यक्त रूप से हम पर यह जिम्मेदारी सौंपी है कि हम अपनी धरोहर की मुस्तैदी के साथ हिफाजत करे और उसका उपयोग अपने लिए नही, बल्कि मनुष्य मात्र के लिए करे। किन्तु जमीन समाज की है, यह बात आसानी से मान ली जाती है, क्योकि जमीन कुदरत की देन है। परन्तु व्यापार, उद्योग-धन्धो और अन्य व्यवसायो के क्षेत्र मे इस तरह का सिद्धान्त सर्वमान्य होना कुछ मुश्किल होता है। लेकिन जब भूदान हमारे पाँच लाख गाँवो मे इस विचार का बीजारोपण कर देगा और एक हद तक ही क्यो न हो, जब जमीन के मालिक उस विचार को स्वीकार कर लेगे, तब दूसरे क्षेत्रो मे भी उस विचार के अकुरित होने और पनपने के लिए वातावरण बन जायगा।

वास्तव मे भूदान-यज्ञ-आन्दोलन अब इतनी प्रगति कर चुका है कि बोधगया मे सम्पत्ति-दान की तरफ भूदान जितना ही ध्यान देने का जो सकल्प किया गया, वह उचित ही है। इस आर्थिक

क्रान्ति के साथ-साथ पुनर्निर्माण का काम भी हाथ मे लेना पडेगा।

रचनात्मक काम और कार्यकर्ता

आज भी खादी, ग्रामोद्योग आदि के समान वहुत से रचनात्मक काम हो रहे है। किन्तु वर्तमान सामाजिक स्थिति में इन प्रवृत्तियो के कारण कोई रद्दोवदल पैदा नही होता। उदाहरण के लिए किसी गाँव मे खादी का काम दस-वीस साल से चल रहा होगा और फिर भी ग्रामीण समाज के ढाँचे पर उसका जरा भी असर नही पडा होगा। इस तरह का रचनात्मक कार्य निष्फल है या अधिक से अधिक कष्ट-निवारण करनेवाला है। गाधीजी की रचनात्मक कार्य की कल्पना ऐसी नही थी। वे जो कुछ भी थे, पर सवसे पहले वे क्रान्तिकारी थे। उन्होने खुद लिखा है—'कुछ लोगो ने मुझे अपने जमाने का सवसे वडा क्रान्तिकारी कहा है। यह गलत हो सकता है, लेकिन मै अपने आपको एक क्रान्तिकारी मानता हूँ—एक अहिंसक क्रान्तिकारी।' विनोवा की प्रतिभा ने उस क्रान्तिकारी मार्ग का आविष्कार किया है।

वहुत से रचनात्मक कार्यकर्ता आज भी भूमिदान को एक ऐसा काम समझते है, जो समय वचने पर किया जा सकता है या दूसरे कामो के साथ-साथ आनुषगिक रूप से किया जा सकता है। किन्तु एक गाधीनिष्ठ के लिए, यानी अहिंसक क्रान्तिकारी के लिए, भूदान केवल अनेक रचनात्मक कार्यो में से एक कार्य नही है। वह सारे रचनात्मक कार्यो का अधिष्ठान है। भूदान के संदर्भ मे रचनात्मक कार्य सृजनात्मक वन जाता है, भूदान के अभाव मे

वह एक निर्जीव चेष्टा मात्र रह जाता है। भूदान नित्य-प्रवाहिनी नदी के समान है और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ नौकाएँ हैं। पानी की धारा न हो, तो ये किश्तियाँ कीचड में फँसकर रुक जाती हैं। नदी उन्हे जिन्दगी और रफ्तार देती है और तब वे यात्रियो को पार लगाती है।

राजनीतिज्ञों का रुख

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, अगर बहुत से रचनात्मक कार्यकर्ता भूदान को सिर्फ कई प्रवृत्तियो में से एक समझते हैं, तो अधिकाश राजनीतिज्ञ, बराये मेहरबानी उसे सिर्फ एक ऐसा सदुद्देश्यपूर्ण आन्दोलन समझते है, जो यथासमय कानून से अपने उद्देश्यो को पूरा करने मे मदद पहुँचा सकता है। वे अपने ज्यादा महत्त्वपूर्ण कामो में से जितना वक्त बच सके, उतना वक्त और यथावकाश सहयोग देने का आश्वासन दे देते है। उनके मन मे यह पक्का निश्चय होता है कि इसमे आखिरी बात तो हमारी ही मानी जायगी, क्योकि इतना गहरा और इतने बडे पैमाने पर परिणाम करनेवाले सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन भला राज्य के सिवा और कौन कर सकता है? आम तौर पर राजनीतिज्ञो का यही रुख है, चाहे आज राज्यसत्ता के सूत्र जिनके हाथो में हे वे हो या जो उन्हें अपने हाथो में लेने की आकाक्षा रखते हो, वे राज्य और राजनीतिज्ञ भूदान-आन्दोलन की जो कुछ सहायता कर सकते है, उनके लिए यह आन्दोलन कृतज्ञता जरूर है, बशर्ते कि वह सहायता ठीक ढग की हो।

किन्तु अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए वह राज्यसत्ता के

प्रयोग पर निर्भर नही है। वल्कि वह दण्ड-शक्ति के वदले जन-शक्ति पर आधार रखता है। गाधीजी ने जो कहा था, उसे जरा हम स्मरण करें—'हमारे हाथो मे सत्ता आ जाने के वाद भी मत-परिवर्तन हमारा अपनी मर्जी से अपनाया हुआ हथियार होगा।' इसीलिए विनोवाजी जनता के पुरुषार्थ पर इतना जोर देते रहे है। क्रान्ति चाहे हिसक हो या अहिसक, जनता ही करती है, सरकारे कभी नही करती। जनता जव क्रान्ति कर लेती है, तव सरकारें उसका अनुसरण करती और अपनी सम्मति की मुहर लगा देती है। जैसा कि गाधीजी ने कहा है—'मत-परिवर्तन के पीछे कानून आता है।' इसीलिए विनोवाजी कानून के लिए दूसरे कई लोगो की तरह पुकार नही मचाते। वे जानते है कि जिस दिन लोग अपना काम कर चुके होगे, उस दिन कानून वनकर रहेगा, चाहे हुकूमत किसी भी पार्टी के हाथ में क्यो न हो।

भूदान और राजनीति

यहाँ हमे भूदान-यज्ञ-आन्दोलन के राजनैतिक दर्शन का परिज्ञान होता है। अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिए सत्ता हाथ मे ले लेने की उसकी मशा नही है। अपनी इस नीति के अनुसार वह राज्य पर कब्जा करने के लिए स्वय एक पार्टी वनाना या वनना नही चाहता। इसके वदले उसका यह इरादा है कि सरकार चाहे कुछ करे या न करे, लोग स्वतत्र रूप से अपने व्यक्तिगत जीवन मे क्रान्ति करने के लिए प्रवृत्त हो और उसके द्वारा समाज मे क्रान्ति करें। इसके अलावा वह ऐसी परिस्थितियाँ प्रस्तुत करना चाहता है, जिसमे लोग खुद सीधे तौर से अपना इन्तजाम

आप कर ले और उसमे पार्टियो अथवा पार्लमेण्टो का किसी तरह का दखल न हो। अराज्यवाद और कम्यूनिज्म की तरह गाधी-दर्शन में भी अन्त में एक राज्य-विहीन समाज की कल्पना है। आज के ससार में राज्य-सस्था अपने सर्वसत्ताधारी रूप मे ही नही, वल्कि लोक-कल्याणकारी रूप मे भी उत्तरोत्तर अधिक सत्ता और अधिक जिम्मेवारी दखल करती जा रही है। लोक-कल्याणकारी राज्य जनता की भलाई के नाम पर मनुष्य को उतना ही गुलाम वनाने पर आमादा है, जितना कि सर्वाधिकारी राज्य। इस वढते हुए लकवे को रोकना लोगो का कर्तव्य है। लोक-कल्याणकारी राज्य लोगो का वनाया हुआ होता है, क्योकि वे ही उसे खडा करते है, पर इतने से वस्तुस्थिति में कोई फर्क नही पडता। लोकतन्त्रात्मक चुनाव की तरकीव से पाँच सौ[1] प्रतिनिधि अठारह करोड[2] लोगो की वरावरी, सिर्फ प्रौढो को ही गिना जाय, तो कभी नही कर सकते। जिस हद तक ये अठारह करोड लोग अपना कामकाज प्रत्यक्ष रूप में खुद सँभाल लेगे, उस हद तक राज्य-सस्था की सत्ता तथा कार्य सीमित होते चले जायँगे और वास्तविक लोकतन्त्र चरितार्थ होगा।

अहिंसक लोकतंत्र की ओर

कम्युनिस्ट देशो का अनुभव यह वतलाता है कि हम तुरन्त जो कदम उठाते है, उनका हमारे अन्तिम ध्येय के साथ मेल न

१　भारत की 'लोकसभा' (पार्लियामेंट) की लगभग सदस्य सख्या

२　भारत की आवादी का वालिग हिस्सा।

रहा, तो हम ऐसे मुकामो पर पहुँच सकते है जो हमारे लक्ष्य से बिलकुल दूसरी तरफ हो। अपने सामने राज्यविहीन समाज का उत्कृष्ट आदर्श रखकर कम्यूनिस्ट लोग राज्यसत्ता की मार्फत हरएक बात करने के लिए तत्पर हुए। नतीजा यह हुआ कि राज्य-सस्था हर दिन अधिकाधिक सत्ता हडपती गयी और राज्य विलीन होने के वदले सर्व-व्यापी राज्य-सस्था अवतीर्ण हुई।

इसी कारण भूदान अथवा सर्वोदय-आन्दोलन का यह आग्रह है कि यदि हमारा अन्तिम लक्ष्य 'राज्य-निरपेक्ष समाज की स्थापना' है, तो आज और इसी समय हमें ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित करनी चाहिए, जिनमे लोग अपने ऊपर अधिक निर्भर रहते चले और सरकार पर कम निर्भर रहते जायँ। राज्य-सस्था कभी सम्पूर्ण विलीन होगी या नही, यह कोई कह नही सकता। किन्तु यदि हम अहिंसक लोकतन्त्र के आदर्शो को स्वीकार करते है, तो उनके लिए प्रयत्न करना हमें आज से ही शुरू कर देना चाहिए। कहना न होगा कि जो लोग राज्य के विना काम चलाना चाहते है, या राज्य पर कम-से-कम निर्भर रहना चाहते है, वे आत्म-नियंत्रित लोग होगे—सयमी, न्यायी और अन्योन्य-सहयोगी होगे।

आखिर मे यह भी कह दूं कि जब ससार के लोग ऐसे बन जायेंगे और सरकारे विलीन हो जायँगी या बहुत-कुछ बिखर गयी होगी, तभी दुनिया मे शान्ति होगी। यह सभव नही है कि सरकारें लडाइयाँ बन्द करेगी। जो जनता सरकारो से छुटकारा पायेगी, वही यह कर सकेगी। लेकिन यह विषयान्तर हुआ।

यह हुआ, भूदान-आन्दोलन का राजनीति के प्रति जो रुख है, उसके बारे मे। इतना और कह देना बाकी है कि एक अर्थ मे भूदान ही अपने में एक उत्कट और गहरा राजनीतिक आन्दोलन है। जो आन्दोलन मनुष्य और समाज मे इतनी आमूलाग्र क्रान्ति करने का इरादा रखता है, वह राजनीति-निरपेक्ष नही रह सकता। किन्तु उस राजनीति का स्वरूप वैसा है, जैसा कि मैंने ऊपर बताया है। वह राजनीति पार्टियो, चुनावो, पार्लमेण्टो और सरकारो की राजनीति नही है। वह लोगो की राजनीति है। इसीलिए वह राजनीति नही, बल्कि जैसा कि विनोबा कहते है, 'लोकनीति' है।

जीवनदान की विशेषता

आन्दोलन की इस सर्वस्पर्शी व्यापक भूमिका, उसके क्रान्तिकारी और निर्माणकारी स्वरूप तथा उसकी नैतिक और मानवीय वृत्ति के सन्दर्भ मे हमें अपने जीवनदान का अर्थ समझना है। मैंने जीवन-दान की कुछ ऐसे आदमियो द्वारा की गयी व्याख्याएँ देखी है, जिनसे हमें अधिक बुद्धिमत्ता की अपेक्षा थी। उन लोगो ने दूसरे किसी भी प्रकार के स्वार्थरहित जीवन-समर्पण से जीवन-दान को समकक्ष बतलाकर उसकी सारी विशेषताओ से उसे वञ्चित कर दिया है। जीवनदान का विशेष आशय यह है कि भूदान अपने सर्वस्पर्शी व्यापक अर्थ में जितने महत्त्व का काम है, उतने महत्त्व का और दूसरा कोई काम नही है। इसलिए उसके सामने दूसरी सारी प्रवृत्तियाँ गौण मानी जानी चाहिए। जीवन-दान का आवाहन ठीक इसीलिए हुआ कि कुछ इने-गिने लोगो के सिवा भूदान के काम में जो लोग इकट्ठा हो गये थे, उनमें यह

निष्ठा नही थी और इसीलिए इसी एक काम पर सारी शक्ति केन्द्रित करने की वृत्ति भी नही थी। पिछले तीन वर्षो के अनुभव ने गाधीजी के क्रान्तिकारी दर्शन और प्रक्रिया की कार्य-क्षमता नि.सन्दिग्ध रूप से प्रमाणित कर दी है। ३० अप्रैल, १९५४ तक का पचीस लाख का अखिल भारतीय लक्ष्याक पूरा हुआ और उसके उपरान्त आठ लाख एकड अतिरिक्त जमीन मिली। यह सफलता अपूर्व थी। किन्तु यदि गाधीजी और विनोबा का सन्देश हर गाँव और हरएक घर तक पहुँचाने के लिए काफी सख्या में कार्यकर्ता होते और जिन कार्यकर्ताओ ने प्रत्यक्ष समय दिया, वे अगर उपयुक्त कार्यकर्ता होते तथा वे निष्ठा एवं एकाग्रता से काम करते, तो तैतीस लाख का अक आसानी से एक करोड़ तक पहुँच सकता था।

वस्तुस्थिति तो यह थी कि भूदान-कार्यकर्ताओ मे से ज्यादातर लोग उमग और आवेश की घडी में काम करते थे। उनमें से बहुतेरे आन्दोलन के मूलभूत सिद्धान्त भी नही समझते थे। कई कार्यकर्ताओ ने अपनी जमीन या अन्य सम्पत्ति का उचित हिस्सा तक दान नही किया था। बहुत से अपनी पार्टी का फायदा सामने रखकर या आगे कभी अपनी पार्टी के या अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए फायदा उठाने के इरादे से काम करते थे। इस परिस्थिति के रहते हुए भी इतने थोडे समय में इतना काम हो सका, यह घटना-चमत्कार से कम नही है।

युग की चुनौती

किन्तु यदि अहिंसा को हिंसा पर विजय पानी है, तो उसे

तीव्र गति से काम करना होगा। अन्यथा घटना-चक्र आगे बढता चला जायगा और हिंसा की बाढ में अहिंसा डूब जायगी। लोगो के सामने निहायत जरूरी समस्याएँ पेश है। उन्हें अगर अहिंसा जल्दी हल न करेगी, तो अहिंसक कार्यकर्ता के लिए इतिहास की गति रुकनेवाली नही है। वर्तमान समाज-रचना अपने सारे लोभ, लालच, स्वार्थ, मानव-विमुखता, अन्याय, शोषण और विषमता के साथ जानी ही चाहिए। यदि अहिंसा शीघ्र ही उसे नही बदलेगी, तो हिंसा कदम बढायेगी। यह दूसरी बात है कि हिंसा कोई भी समस्या हल नही कर सकती और एक तरह के अन्याय, शोषण, लोभ और स्वार्थ की जगह दूसरी तरह का अन्याय, लोभ, शोषण और स्वार्थ ले लेगा। पर लोगो के ध्यान में यह बात जब तक आयगी, तब तक समय चूक गया होगा। उस बीच अन्धकार की शक्तियो ने अपना आसन जमा लिया होगा।

इसलिए बोधगया में हम लोगो में से कुछ को यह अनुभूति हुई कि अब परिस्थिति की गभीरता और तेजी से कदम बढाने की जरूरत हरएक के चित्त पर अकित करने का समय आ गया है। सारी बातें अनुकूल थी। युगात्मा हमारे साथ थी। अब तक थोडी-बहुत निराशा भले ही हुई हो, फिर भी लोगो का सहयोग उत्कृष्ट था। कमी अगर किसी बात की थी, तो ऐसे एकनिष्ठ और सुयोग्य कार्यकर्ताओ की सेना की थी, जो दूसरे सारे कामो को छोडकर अपना जीवन अन्त तक इसी महान् आन्दोलन को समर्पित कर दें। इसलिए जीवन-दान का आवाहन हुआ।

एकमात्र रास्ता

बोधगया में और उसके बाद लोगो की तरफ से जो प्रत्युत्तर मिला, वह आश्चर्यजनक है। किन्तु वह काफी नही है। जो काम हमे करना है, वह प्रचण्ड है। पाँच करोड एकड जमीन हस्तान्तरित होनी चाहिए, कम नही। जो जमीन मिली है, उसे बाँटना है। भूमिहीनो को खेती के साधन दिलाने है। जिन गाँवो मे भूदान सफल हुआ हो, वहाँ नयी रचना कायम करनी है—पाँच लाख गाँवो मे ग्रामराज्य, शहरों और पाट नगरो मे सम्पत्ति-दान, अन्त मे पूंजीवाद का विलय और कितनी ही दूसरी बाते।

मनुष्य आज आत्म-विनाश की तरफ बेतहाशा बढ़ रहा है। सारी दुनिया एक खतरनाक चट्टान के कगारे पर डावाँडोल हो रही है। अगर उसे बचाना और सँवारना है, तो एक ही रास्ता है—भूदान या सर्वोदय का। अत्यन्त व्यापक अर्थ में अन्तर्राष्ट्रीय भूदान की आवश्यकता है।

क्रान्ति का मुहूर्त

यह सारा महान् और उदात्त कार्य हमे पुकार रहा है। मै दूसरी किसी चीज की कल्पना भी नही कर सकता, जो हमारी निष्ठा और पुरुपार्थ के लिए इससे अधिक उपयुक्त हो। इस देश मे हम करोड़ो है। क्या इन करोड़ो मे से कुछ हजार भी ऐसे स्त्री-पुरुप नही निकलेगे, जो इतने स्वार्थ-त्यागी, इतने साहसी और इतने दूरदर्शी होगे कि अपने आपको इस ऐतिहासिक आन्दोलन मे खपा देगे ? इस प्रश्न के उत्तर पर भविष्य का इतिहास, कम-से-कम भारत का इतिहास निर्भर रहेगा।

अग्रेजी राज्य के जमाने मे जोशीले नवयुवक सरकारी नौकरियो में जाने से इनकार कर देते थे। वडी-वडी तनखाहो और ऊँचे-ऊँचे अधिकार-पदो का मोह उन्हें नही होता था। अव तो हमारे होनहार नवयुवको के लिए नौकरी ही मुख्य आकर्षण है। इसमें कोई हर्ज भी नही है। किन्तु इनमे से जो अधिक भावना-सम्पन्न और कम स्वय-केन्द्रित है, उन्हे यह समझना चाहिए कि नित्य के शासन-कार्य आवश्यक होने पर भी, राष्ट्र का निर्माण नही कर सकते। जिन लोगो के मन मे राजनैतिक महत्त्वाकाक्षाएँ हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि विधान सभाएँ और सरकारे भी राष्ट्रनिर्माण नही कर सकती। यदि वे उचित रूप से काम करें, तो इस काम में मदद भर कर सकती है। लेकिन वे नुकसान आसानी से पहुँचा सकती है। जनता ही स्वय अपना निर्माण कर सकती है। इसलिए लोगो के पास पहुँचना, उनके साथ रहना और स्वावलम्वी वनने में उनकी सहायता करना सवसे अधिक महत्त्व का काम है।

नवयुवक अपना हृदय टटोलें। क्या वे आसान जिन्दगी चाहते है? क्या वे सामाजिक और राजनैतिक चढा-ऊपरी की दौड में शामिल होना चाहते है? जो इस दौड में शामिल होते हैं, वे आखिर जनता की पीठ पर ही सवार होते है। मुझे पूर्ण आशा है कि इस देश में ऐसे काफी तरुण-तरुणियाँ हैं, जो एक उदात्त ध्येय के लिए कष्टमय और सकटमय जीवन का आलिगन करेंगे। अब खोने के लिए समय नही है। मुहूर्त टल रहा है। कल, वहुत देर हो सकती है।

—**जयप्रकाश नारायण**

एकाकी पुरुषार्थ

मै जीवन-दानियो से कुछ कहना चाहता हूँ। लोग पूछते है कि 'जीवन-दानियो को क्या मदद मिलेगी ?' मै कहता हूँ कि 'लोगो मे उनकी हँसी होगी, यह पहली मदद उनको मिलेगी। भाइयो। पहले आपको उपहास मिलेगा और उसे आपको स्वीकार करना होगा। दूसरी देन यह होगी कि मारे-मारे घूमना होगा। ये दोनो काम आप जब करेगे, तब आपकी इज्जत होगी।'

एकाकी काम करने की आपको तैयारी रखनी होगी। दूसरा कोई न आये, तो भी 'हमे काम करना है' इस खयाल से आप काम करने निकले। मै चाहता हूँ, सकट मे आप लोग एक-दूसरे को मदद दे, राहत दे, कधे से कधा भिडाकर काम करे और आपका एक 'बन्धु-मण्डल' बने। लेकिन उसके साथ आपको यह खयाल रखना है—'एकाकी पौरुष कुर्यात्'—पराक्रम, परिश्रम अकेले करना चाहिए। उसके लिए दूसरे की बाट जोहना ठीक नही।

बाबा जब भू-दान माँगने निकला, तो एकाकी ही निकला—किसीकी सलाह तक न ली। अगर वह नजदीक के लोगो से

पूछता तो वे कहते—'पाँच करोड एकड जमीन गरीबो के लिए, और वह भी हिन्दुस्तान में, नही मिल सकती। अगर किसी खास गाँव से मन्दिर या आश्रम के लिए वह लेनी हो, तो मिल जायगी।' इस तरह उसे अनुकूल सलाह नही मिलती। फिर भी परमेश्वर पर विश्वास रखकर वह निकल पडा और उसने काम शुरू कर दिया।

पहले तो बाबा अकेला था। साथ में दस-पाँच लोगो की जमात थी। अब आप देखते है कि काम बढ रहा है। प्रान्त-प्रान्त में काम चल रहा है, जिले-जिले में समितियाँ बनी है और बन रही है। लोगो की काफी सहानुभूति मिल रही है। तो, इस पर से आपको समझना चाहिए कि पहले तो आपको एकाकी पुरुषार्थ करना है।

इसके लिए आपको अपने जीवन की शुद्धि करनी चाहिए। काम-क्रोध से बचना चाहिए, कारण यह शुद्धि का काम है।

—विनोबा

निरन्तर तपना है

हम जीवन-दान देते है, तो यह सोचना चाहिए कि देश के काम में हमारा उपयोग हो और हमसे देश को लाभ हो। इसलिए अपनी शुद्धि भी होनी चाहिए। शुद्धि में कई प्रकार की दीक्षाएँ और शिक्षाएँ आती है, खासकर चित्त पर अकुश रहना चाहिए। जितने भी लोग इसमें आते हैं, उनकी जिम्मेदारी है कि वे अपनी वासनाओ पर काबू रखें। अगर हम विषय-वासना मे फँसते

चले जायँगे, तो हमारा काम नही चलेगा। अत विषय-वासना से अधिक-से-अधिक मुक्त रहना चाहिए, हमेशा इन्द्रिय-संयम करना चाहिए ।

इसके साथ ही जीवन-दानियो मे सबके साथ सहयोग और काम करने की तैयारी होनी चाहिए। निरन्तर काम करते रहना चाहिए। अरविन्द घोष जैसे पाण्डिचेरी मे गये और चालीस वर्ष तक ध्यान मे मग्न रहे, गाधीजी जैसे स्वराज्य के काम में लगातार लगे रहे, वैसे ही हमे भी लगातार काम करना है। हमे 'रामराज्य' का नमूना बनाना है। अत हम जिस क्षेत्र मे भी जाकर काम करें, समर्पित होकर करे। अहकार छोड़कर और अपने ऊपर अकुश रखकर लगातार काम करे। इसमे एक दिन की भी ढिलाई न होनी चाहिए । रोज रात मे सोचना चाहिए कि आज दिन भर क्या काम हुआ ? जिन पर घर का भी भार है, उन्हे थोडा समय घर के काम के लिए भी देना पडेगा। लेकिन घर का काम करते हुए भी इस काम का चिन्तन करना चाहिए।

यह समझना चाहिए कि जिसने जीवन-दान दिया है, वह उसने किसीके भरोसे नही दिया है। दूसरे लोग नही करेंगे, तो भी हमे वह करना ही है । हमने भगवान् को साक्षी रखकर जीवन-दान दिया है। हो सकता है कि मालकियत को पकड़े रखनेवाले लोग प्रहार करे, तब अकेले भी काम करते रहना होगा। इस तरह लगातार काम करने से ही क्रान्ति होती है। अगर क्रान्ति का काम उठाया तो उसमे मर-मिटना पड़ता है। आखिर सोने की शुद्धि कैसे होती है ? जैसे-जैसे वह तपता

है, वैसे-वैसे ही उसकी शुद्धि होती है। इस तरह लगातार काम करनेवाले लोग हमें चाहिए । जहाँ निरन्तर काम करनेवाले लोग हो, वहाँ दो-चार दिन काम करनेवाले लोगो को भी अगर आप ले जाते है, तो काम हो जाता है। अखण्ड सेवक और बीच-बीच में काम करनेवाले लोग, इस तरह साथ-साथ मिलकर काम करे, तो काम अच्छा होता है। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि हमारा जीवन सतत साधनाशील हो। हमें सोने के समान निरन्तर तपना होगा।

जगदीशपुर (विहार)		—विनोबा
२७ मई, १९५४

आचरण के सूत्र

जीवन-दान में घबडाने जैसी कोई बात नही है। यह भी मानने की जरूरत नही कि 'जब तक हम शुद्ध नही हुए, तब तक हमारा जीवन-दान हो ही नही सकता।' क्योकि हृदय की एक बार की शुद्धि कोई पूर्ण क्रिया नही, वह तो सतत जारी रहनेवाली क्रिया है। इसलिए उसकी तरफ हमारा पूरा ध्यान रहे, और हम सावधान रहे, तो हृदय-शुद्धि की क्रिया सतत होती रहेगी, जो होनी भी चाहिए।

ऐसा कहकर सन्तोष कर लेने का अवसर नही आयगा, जब मानव कह सकेगा कि 'अब तो मेरे हृदय की शुद्धि हो चुकी और इस विषय मे करने को कुछ बाकी नही रहा।' सच तो यह है कि आत्म-सशोधन के परिणामस्वरूप उसे अपने कुछ-न-कुछ

दोष हमेशा दीखते ही रहेंगे। हम उन दोषों से अपने को भिन्न समझकर उन्हें सतत दुरुस्त करने की कोशिश करते रहें, इतना ही जरूरी है। अगर कोई इसका यह अर्थ कर बैठे कि जिनके हृदय की शुद्धि नहीं हुई है, उनके जीवन का दान हो ही नहीं सकता, तो वह ठीक नहीं होगा। कहा गया है कि कचरे का दान नहीं हो सकता। उसका सार ग्रहण करना चाहिए। वह यह कि अगर हम अपने जीवन की शुद्धि की कोशिश न करेंगे, तो जीवन-दान हो ही नहीं सकेगा। याने मानव बाहर से कह दे कि 'मैं अपना जीवन अमुक काम के लिए समर्पित करता हूँ' और उसके अन्दर जो नाना तरह के विकार हैं, उस तरफ ध्यान ही न दे और ऐसा ही जीवन चलता रहे, तो वह उसका सही दान न होगा। वह चल भी न सकेगा।

अकेले जूझने का मौका

इसके अलावा, जब हम किसी एक काम के लिए अपने को समर्पित करते हैं, तो दूसरों से बहुत ज्यादा मार्गदर्शन की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। जीवनदान का अर्थ अगर कोई यह समझता हो कि 'अमुक के चरणों में, अमुक के हाथों में हमने अपना जीवन सौंप दिया', तो वह ठीक नहीं है। जीवन जब एक कार्य के लिए अर्पण हो जाता है, तो परमेश्वर के नाम पर उस कार्य के विषय में सतत चिन्तन करने, रास्ता ढूंढने और काम करने की, चाहे दूसरों से कोई मदद मिले या न मिले, जिम्मेदारी आ जाती है। और ऐसे प्रसंग खासकर क्रान्तिकारी आन्दोलनों में बहुत दफा आते हैं, जब कि बहुत सारी जमात किसी समय विरुद्ध

हो जाती है। किन्तु चूंकि अब तक सारा रास्ता बिलकुल सीधा, सुरक्षित और खतरे से खाली रहा, इसलिए वह हमेशा ऐसा ही रहेगा—ऐसा मानने का कोई कारण नही। क्योकि आगे कदम उठाने पडते है, तब कुछ लोगो को थकान भी आती है और कुछ साथी उस समय तक काम करने के बाद ऊबकर वापस भी चले जाते है। ऐसी हालत में अकेले जूझने का समय आ सकता है। राणा प्रताप की कहानी तो आपने सुनी ही होगी। वे हिंसक हथियार लेकर लडते थे, इस वास्ते उनको जगलो और पहाडो में मारा-मारा घूमना पडता था। हम अहिंसा से काम करनेवाले हैं, इसलिए हम पर कोई खतरा या सकट आयगा ही नही, ऐसी बात नही है। हमारी बात जब तक चुभती नही, तब तक तो लोग उसे स्वीकार करते है, लेकिन जब वह चुभेगी और ऐसी हालत पैदा होगी, जिसके कारण राजनीति पर दबाव पडे, तो उस वक्त यह सभव मान लेना चाहिए कि हमे शायद अकेले ही काम करना पड़े और विरोध के बीच करना पडे।

लेकिन इससे हमें घबडाना नही है। जैसे कुँआ खोदते-खोदते जब पहले मिट्टी निकलती है, तब तो जल्दी-जल्दी खुदता है। किन्तु आगे खोदने लगते है, तो अचानक पत्थर सामने आता है। जिस तरह कुँआ खोदने मे पत्थर आने पर मुश्किल से काम होता है, उसी तरह आन्दोलन में भी आगे कुछ कठिनाइयाँ आना सभव है। अत जीवन-दानियो को ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें गभीरता और शान्ति से काम करना है—समझ-बूझकर, मन को हर स्थिति के लिए तैयार रखकर काम करना है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्

बहुत ज्यादा काम कर डालें और उससे महीने दो महीने में ही शरीर बहुत थक जाय और फिर उसकी प्रतिक्रिया हो, तो यह भी नही होना चाहिए। एकबारगी सारी शक्ति खर्च नही कर डालनी चाहिए, बल्कि शान्ति से सब काम सतत चलना चाहिए। जो पैदल यात्रा करनेवाले साथी होगे, उनकी तो सेहत सुधरनी ही चाहिए। तभी हम कहेंगे कि वे यशस्वी (सफल) है। अगर प्रवास के कारण किसीकी तन्दुरुस्ती बिगड़ती है, तो यही कहा जायगा कि उसके जीवन मे योग नही सधा। जीवन-दान करनेवाले का जीवन तो योगयुक्त होना चाहिए। जैसे आज हम काफी देरी से सोने जा रहे है, पर यह जीवन-दान में सदा नही चल सकता। उसमे तो नौ बजे सोने और बहुत सुबह उठने की तैयारी होनी चाहिए, तभी वह योगयुक्त जीवन होगा। जब कि शरीर द्वारा काम लेना है, तब तो उसे भी औजार समझ-कर काम करना होगा, किसी प्रकार का अतिरेक न होना चाहिए। गाधीजी के उदाहरण से हमें यह बहुत अच्छी तरह समझ में आ सकता है। उन्होने अपना जीवन बहुत ही समत्व-युक्त किया था। खान-पान, आहार-विहार सभी मे उनका समत्व रहा। राजनीति और विभिन्न सामाजिक कार्यों मे सतत काम करते रहनेवालो मे इस तरह का उदाहरण शायद ही दीख पड़ेगा। कुछ लोग होगे, जो एकान्तप्रिय हो, ध्यानयोगी हो, उनके जीवन मे ये बाते होती है। परन्तु समाज में सतत काम करनेवाले मनुष्य का ऐसा उदाहरण बहुत कम देखने मे आता है। गाधीजी अस्सी

वर्ष तक सतत काम करते रहे, तब भी उनका दिमाग तेजस्वी ही बनता गया। जैसे-जैसे बुढापा आया, वैसे-वैसे उनकी प्रज्ञा तेजोहीन नही, तेजस्वी ही होती गयी। इसलिए जिन्हे सतत काम करना है, जिन्होने जीवन-दान दिया है, उनके जीवन मे योगयुक्त आचरण होना चाहिए। ये जो तीन बातें जीवन-दानियो के आचरण के बारे में सहज कह सकता था, मैंने कह दी।

आजीविका का प्रश्न

फिर सवाल यह आयगा कि जिन्होने जीवन-दान दिया ह, उनकी आजीविका का क्या हाल होगा ? हमारे खयाल से यह कोई कठिन सवाल नही होना चाहिए। वास्तव में ऐसा सवाल उठना भी नही चाहिए, क्योकि जिन्होने जीवन-दान किया है, वे अपने पाँवो पर खडे रहने में समर्थ हो सकते है। किन्तु जहाँ एक जमात काम करने जाती है, वहाँ ऐसो के लिए कुछ विचार या कुछ उपाय-चिन्तन करना गलत नही होगा, बल्कि उचित होगा और वह हो भी सकेगा। वह 'सपत्तिदान-यज्ञ' के जरिये होना चाहिए, ऐसा हमारा आग्रह है। अभी तो गाधी-निधि से 'सर्व-सेवा-सघ' की मार्फत पैसा मिलता है, जो आगे भी मिलेगा, पर उस पैसे को हम महत्त्व नही देते। जरूरी काम तो यह होना चाहिए कि सम्पत्तिदान का प्रवाह बढते रहना चाहिए ताकि उसमे से कार्यकर्ताओ का कुछ-न-कुछ पोपण होता रहे। अब कार्यकर्ताओ को जो दिया जायगा, वह आकर्षक जैसा नही होगा। ऐसा आकर्षक वेतन इसमे मिलनेवाला भी नहीं है। वह तो केवल जिन्दगी बिताने के लिए होगा। प्राण कायम रहे

और शरीर का सन्तुलन बना रहे, इस वास्ते जो चाहिए उतना ही मिल सकेगा। बहुत ज्यादा तो उनको मिलनेवाला नही है। इस तरह सम्पत्तिदान के जरिये ऐसे लोगो को कुछ जरूर दिया जा सकता है और इसका आयोजन होना चाहिए।

इनकी ट्रेनिग (प्रशिक्षा) का भी काम होना चाहिए। आपको मालूम ही है कि जिन्होने अपना समय देना तय किया है, वे अगर कुशल न रहे, शक्तिशाली न रहे तो उनका समय लेकर भी उसका समुचित उपयोग नही होगा। इसलिए उन्हे तालीम देने की योजना भी चाहिए। पर यह तो साधारणतया शिविरो द्वारा हो ही सकती है। और कुछ ऐसे आश्रम भी हमे स्थान-स्थान पर कायम करने पडेगे, जहाँ ऐसा काम करने वाला जीवनदानी बीमार पड जाय, तो वह वहाँ आकर महीना-पन्द्रह रोज रहे एव उसकी सेवा वहाँ हो। इस तरह सेवा करनेवालो का भी स्थान, जिसे हम गृह कहते है, हरएक जिले मे हो तो अच्छा है। लेकिन कम-से-कम एक-एक प्रान्त मे एक-दो जगहे ऐसी हो ही, जहाँ पाँच-दस दिन किसीको कुछ आराम करने को मिले। कुछ ज्ञान भी विश्राम के साथ-साथ प्राप्त हो और उसे कोई बीमारी हो, तो उसका भी इलाज वहाँ हो। इस तरह उस मनुष्य को राहत मिलने की योजना भी करनी पडेगी। ट्रेनिग के साथ-साथ यह भी करना पडेगा।

हँसते हुए चेहरे

जीवन-दान मे क्या-क्या चीजे आती है ? यह जब पूछा जाता है, तब मै कहता हूँ—सब उनमे आता है। उनमे जमीन

की सेवा भी आती है और सेवा करते-करते सोचना भी। हममे सहनशीलता भी होनी चाहिए और हमारा चेहरा सदा प्रफुल्लित (प्रसन्न) रहना चाहिए। जिन्होने जीवन-दान किया, उनके चेहरे सदा खुश ही दीखने चाहिए। क्राइस्ट (ईसा) ने अपने शिष्यो से कहा था कि 'उपवास न करो और अगर करने ही हो तो आपका चेहरा प्रफुल्लित रहे, अन्यथा लोग कहेंगे कि उपवास करनेवालो का चेहरा ऐसा होता है।' जेल मे हम लोगो की दाढी अक्सर बढ जाती थी। जमनालालजी हमारे बीच थे। मिलने के लिए कोई मुलाकाती आया तो उससे मिलने जाने के पहले वे हमसे कहते—'विनोबाजी आपको हजामत करा लेनी चाहिए।' मैं पूछता—'क्यो?' तो वे कहते—'हम मुलाकात के लिए आनेवालो को यह जानने देना नही चाहते कि यहाँ हमारा चेहरा कैसा रूखा-सूखा है। किसी भी तरह हमारा चेहरा उन्हे दया का पात्र न दीखे।' अत हमारे जितने कार्यकर्ता है, उन सबके चेहरे हँसते हुए, दूसरो से प्रेम पूर्वक मिलने के लिए उत्सुक और शान्त होने चाहिए।

—विनोबा

जीवनदानी से अपेक्षाएँ

(१)

हमारी क्रांति अहिंसक है, भूदान-मूलक है और ग्रामोद्योग प्रधान है। इसलिए जो पेशे हिंसा-मूलक हैं, शोषण पर आधार रखते हैं और ग्राम-उद्योगों के खिलाफ हैं, ऐसे कोई पेशे या रोजगार जीवनदानी नहीं करेंगे। आज कोई जीवनदानी अगर इस तरह का पेशा या धन्धा करता हो, तो वह उसमें से जल्द-से-जल्द मुक्त होने की कोशिश ईमानदारी से करेगा। अगर वह खेती या दूसरे किसी उत्पादक परिश्रम से गुजर करता है, तो जितनी जमीन उसके और उसके परिवार के निर्वाह के लिए जरूरी है, उतनी रखकर बाकी भूदान में दे देगा। जो खेती के सिवा दूसरी तरह का परिश्रम करता हो, वह अपनी कमाई में से गुजर के लायक रखकर शेष सम्पत्ति-दान में देगा। जीवनदानी पारिवारिक कामों के लिए कम-से-कम आवश्यक वक्त देगा, ज्यादा वक्त भूदान-यज्ञ के काम के लिए देगा।

इसके अलावा जीवनदानी नीचे लिखी बातों पर अमल करेगा .

१—जीवनदानी का जीवन जहाँ तक सम्भव हो सके, सादा हो। वह खादी नियमित रूप से पहने। खाद्य-वस्तुओं में भी यथासम्भव ग्रामोद्योगी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करे। अपनी पत्नी तथा बच्चों को भी खादी, नयी तालीम इत्यादि की ओर प्रवृत्त करे।

२—जहाँ तक हो सके, जीवनदानी को नियमित रूप से शरीर-श्रम करना चाहिए।

३—कोई भी व्यक्ति यह सोचकर जीवनदान न करे कि कोई व्यक्ति या सस्था उसके निर्वाह-व्यय का प्रवन्ध करेगी। उसे यह विश्वास होना चाहिए कि जब वह अपना जीवन समाज की सेवा में अर्पण करने जा रहा है, तो समाज उसे भूलेगा नही। इस विश्वास से अधिक और किसी प्रकार के आश्वासन की अपेक्षा उसे नही करनी चाहिए। जीवनदान किसी भी प्रकार की नौकरी नही है। जीवनदानी की जीविका का जिम्मा न किसी व्यक्ति ने लिया है और न किसी सस्था ने। हजारो नहीं, लाखो जीवनदानियो की आवश्यकता है। हर गाँव में दो-चार जीवन-दानी होने चाहिए। इतने लोगो का जिम्मा कौन-सा व्यक्ति या सस्था ले सकती है? सारा समाज या राष्ट्र ही यह कर सकता है।

४—भूदान-आदोलन एक क्राति का रूप तभी लेगा, जब कि आम जनता उसे अपने जीवन में उतार लेगी। इसके लिए असख्य कार्यकर्ताओ तथा जीवन-दानियो की आवश्यकता है। उनका सगठन भी मुक्त तथा व्यापक होना चाहिए। इसलिए यह वाछनीय है कि हर छोटे-छोटे हलके मे स्थानीय जीवनदानी तथा अन्य भूदान-कार्यकर्ता मिलकर एक-एक आश्रम की स्थापना करें। यह आश्रम अपने हलके की भूदान-प्राप्ति, वितरण, निर्माण तथा अन्य सभी सर्वोदय-प्रवृत्तियो का केन्द्र बने। पूरा समय देनेवालो का वही घर हो, जहाँ उनके बच्चे तालीम पावें। जहाँ काम से थककर वे विश्राम के लिए आ सकें और जहाँ उन्हे परिवार का-सा स्नेह मिले। आश्रम की अपनी खेती के लिए थोडी-सी जमीन हो और साथ-साथ कुछ उद्योग भी चलें,

जिनमें सभी श्रम करे और अपनी आवश्यकता की कुछ वस्तुएँ पैदा करे। हर आश्रम स्वावलम्बी हो और अपने हलके की जनता के सहयोग से उसका निर्वाह चले।

यह योजना वर्तमान प्रारम्भिक काल के लिए है। कार्य का विस्तार होने पर गाँव-गाँव मे जीवनदानी होगे और उनके घर ही गाँव की सर्वोदय-प्रवृत्तियों के केन्द्र बनेगे।*

(२)

[श्री धीरेन भाई ने अपना जीवनदान करते समय जो निवेदन किया था, वह यहाँ दिया जा रहा है।]

ईश्वर की प्रेरणा से भाई जयप्रकाश ने जीवनदान का जो आवाहन किया, उसके जवाब मे मै भी अपना नाम लिखा रहा हूँ।

मैने काफी घबडाहट के साथ अपना नाम लिखाया है, क्योकि इस आवाहन की जो मूल प्रेरणा है और उस प्रेरणा के पीछे नाम देनेवालो की जो जिम्मेवारी है, उसका मुझे भान है। भाई जयप्रकाश ने सहज ही यह आवाहन किया है। जैसा मैने समझा है, आज की भूदान-प्राप्ति और वितरण के लिए ही उन्होने हमारा जीवन नही माँगा है। भूमिदान के मूल मे जो विभिन्न मन्त्र है, उनकी दीक्षा के लिए ही हमारा आवाहन किया गया है। भूमिदान-यज्ञ मे जो जीवन-क्रान्ति और समाज-क्रान्ति है, उसे दृष्टि मे रखकर यज्ञ की आहुति देनेके लिए उन्होनेहमें बुलवाया है। जयप्रकाश बाबू ने केवल कार्यकर्ता बटोरने के लिए यह सामान्य आवाहन नही किया है। वैसा होता तो विनोबा को, भगवान् प्रेरणा

---

* श्री जयप्रकाश नारायण तथा दादा धर्माधिकारी के लेखो के आधार पर।

हमारे प्रकाशन

(विनोबा)

गीता प्रवचन १)
त्रिवेणी ।।)
विनोबा-प्रवचन (सकलन) ।।।)
भगवान् के दरबार में =)
साहित्यिको से ।।)
गाँव-गाँव में स्वराज्य ।)

(धीरेन्द्र मजूमदार)

शासन-मुक्त समाज की ओर ।=)
आजादी का खतरा ।-)
बापू की खादी ।।)
क्रान्तिकारी चरखा ।-)
युग की महान् चुनौती ।)
नयी तालीम ।।)
स्वराज्य की समस्या ।।)
चरखा-आन्दोलन की दृष्टि और योजना ≡)
ग्रामराज ।-)

(श्रीकृष्णदास जाजू)

सपत्तिदान-यज्ञ ।)
व्यवहार-शुद्धि ।=)
अ० भा० चरखा सघ का इतिहास ३।।)
चरखा-सघ का नव-सस्करण १।।)
चरखे की तात्त्विक मीमासा—हिं०अ० १)

(जे० सी० कुमारप्पा)

गाँव-आन्दोलन क्यो ? ३।।)
गाधी अर्थ-विचार १)
स्थायी समाज-व्यवस्था (भाग २रा) २)
श्रम-मीमासा और अन्य प्रबन्ध ।।।)
खून से सना पैसा ।।।)
जनता की आजादी १।।)
यूरोप गाधीवादी दृष्टि से ।।।)
वर्तमान आर्थिक परिस्थिति १।।)
ग्रामो के सुधार की योजना १।।)
स्त्रियाँ और ग्रामोद्योग ।)
राजस्व और हमारी दरिद्रता २।।)
हिन्दुस्तान और ब्रिटेन का आर्थिक लेन-देन (हिं० गु०) ।।)

(दादा धर्माधिकारी)

मानवीय क्रान्ति ।)
साम्ययोग की राह पर ।)
क्रान्ति का अगला कदम ।)

(जयप्रकाश नारायण)

जीवनदान ।)

(अन्य लेखक)

सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र—शंकरराव देव
श्रम-दान—शिवाजी भावे
विनोबा के साथ—निर्मला देशपाण्डे
पावन प्रसंग—मृदुला मूंदड़ा
भूदान आरोहण—नारायण देसाई
राज्यव्यवस्था : सर्वोदय दृष्टि से—भगवानदास केला
गो-सेवा की विचारधारा—राधाकृष्ण बजाज
भूदान-यज्ञ (नाटक)—गोविन्ददास
सन्त विनोबा की उत्तर भारत यात्रा—दामोदरदास मूंदड़ा
भूदान दीपिका—विमला बहन
साम्ययोग का रेखाचित्र—विमला बहन
पूर्व बुनियादी तालीम—शान्ताबाई नारुलकर
नवभारत—रामकृष्ण शर्मा
गाँव का गोकुल—अप्पासाहेब पटवर्धन

आगामी प्रकाशन

विनोबा की आनन्द-यात्रा—सुरेश रामभाई
वितरण—सर्व सेवा संघ, गया
सुन्दरपुर की शाला का पहला घंटा—जुगतराम भाई दवे
अहिंसक अर्थ-शास्त्र और विश्व-शान्ति—जे० सी० कुमारप्पा
सफाई-शास्त्र—वल्लभस्वामी
शिक्षण विचार—विनोबा
कार्यकर्ता-वर्ग—विनोबा
ज्ञानदेव चिन्तनिका—विनोबा

(उर्दू-साहित्य)

भूदान	≡)	विनोबा का पैगाम
विनोबा की झांकी	=)	भूदान लहरी
भूदान : सवाल-जवाब	≡)	भूदान तहरीक क्या है?
भूदान की तमहीद	-)	

हमारे प्रकाशन

(विनोबा)

गीता प्रवचन १)
त्रिवेणी ।।)
विनोबा-प्रवचन (सकलन) ।।।)
भगवान् के दरबार में =)
साहित्यिको से ।।)
गॉव-गॉव मे स्वराज्य ।)

(धीरेन्द्र मजूमदार)

शासन-मुक्त समाज की ओर ।=)
आजादी का खतरा ।-)
बापू की खादी ।।)
क्रान्तिकारी चरखा ।-)
युग की महान् चुनौती ।)
नयी तालीम ।।)
स्वराज्य की समस्या ।।)
चरखा-आन्दोलन की दृष्टि और योजना ≡)
ग्रामराज ।-)

(श्रीकृष्णदास जाजू)

सपत्तिदान-यज्ञ ।)
व्यवहार-शुद्धि ।=)
अ० भा० चरखा सघ का इतिहास ३।।)
चरखा-सघ का नव-सस्करण १।।)
चरखे की तात्त्विक मीमासा—हिं०अ० १)

(जे० सी० कुमारप्पा)

गॉव-आन्दोलन क्यो ? ३।।)
गाधी अर्थ-विचार १)
स्थायी समाज-व्यवस्था (भाग २रा) २)
श्रम-मीमासा और अन्य प्रबन्ध ।।।)
खून से सना पैसा ।।।)
जनता की आजादी १।।)
यूरोप गाधीवादी दृष्टि से ।।।)
वर्तमान आर्थिक परिस्थिति १।।)
ग्रामो के सुधार की योजना १।।)
स्त्रियाँ और ग्रामोद्योग ।)
राजस्व और हमारी दरिद्रता २।।)
हिन्दुस्तान और ब्रिटेन का आर्थिक लेन-देन (हिं० गु०) ।।)

(दादा धर्माधिकारी)

मानवीय क्रान्ति ।)
साम्ययोग की राह पर ।)
क्रान्ति का अगला कदम ।)

(जयप्रकाश नारायण)

जीवनदान ।)

(अन्य लेखक)

सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र—शंकरराव देव	॥)
श्रम-दान—शिवाजी भावे	॥)
विनोबा के साथ—निर्मला देशपाण्डे	१)
पावन प्रसंग—मृदुला मूंदड़ा	।=)
भूदान आरोहण—नारायण देसाई	।॥)
राज्यव्यवस्था सर्वोदय दृष्टि से—भगवानदास केला	१॥)
गो-सेवा की विचारधारा—राधाकृष्ण बजाज	।॥)
भूदान-यज्ञ (नाटक)—गोविन्ददास	१)
सन्त विनोबा की उत्तर भारत यात्रा—दामोदरदास मूंदड़ा	१॥)
भूदान दीपिका—विमला बहन	=)
साम्ययोग का रेखाचित्र—विमला बहन	=)
पूर्व बुनियादी तालीम—शान्ताबाई नारुलकर	१)
नवभारत—रामकृष्ण शर्मा	४)
गाँव का गोकुल—अप्पासाहेब पटवर्धन	॥)

आगामी प्रकाशन

विनोबा की आनन्द-यात्रा—सुरेश रामभाई
वितरण—सर्व सेवा संघ, गया
सुन्दरपुर की शाला का पहला घंटा—जुगतराम भाई दवे
अहिंसक अर्थ-शास्त्र और विश्व-शान्ति—जे० सी० कुमारप्पा
सफाई-शास्त्र—वल्लभस्वामी
शिक्षण विचार—विनोबा
कार्यकर्ता-वर्ग—विनोबा
ज्ञानदेव चिन्तनिका—विनोबा

(उर्दू-साहित्य)

भूदान	=)	विनोबा का पैगाम	=)
विनोबा की झांकी	=)	भूदान लहरी	–)
भूदान सवाल-जवाब	=)	भूदान तहरीक क्या है ?	=)
भूदान की तमहीद	–)		

[ENGLISH PUBLICATIONS]

Vinoba & His Mission 3–0
Bhoodan-Yajna The Great Challenge of the Age 0–4
Bhoodan-Yajna 1–8
Revolutionary Bhoodan Yajna 0–4
Principles and Philosophy of Bhoodan 0–5
Swaraj-Shastra 1–0
Sarvodaya & World peace 0–2
Lessons from Europe 0–8
Non-Violent Economy and world Peace 1–0
Banishing War 0–8
Currency Inflation—Its Cause and cure 0–12
Economy of Permanence (2 vols) Each 2–0
Gandhian Economy and Other Essays 2–0
Our Food Problem 1–8
Overall plan for Rural Development 1–8
Organisation and Accounts of Relief work 1–0
Philosophy of Work and other Essays 0–12
Peace and Prosperity 1–0
Present Economic Situation 2–0
Peoples China–What I saw and Learnt there ? 0–12
Plan for Economic Development of N W F 0–13
Science and progress 1–0
Stonewalls and Iron Bars 0–8
Unitary Basis for a Non-Violent Democracy 0–10
Why the Village Movement 3–8
Women and Village Industries 0–4
Demand of the Times 0–12
Elements of Village Admin stration and Law 1–0
Whither Constructive work 0–10
Economics/of Peace The Cause and the Man 100